

आमशान्ति मीडिया

मूलयनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15

अंक-22

फरवरी-II, 2015

पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹ 8.00

प्रेम और दृढ़ता का दूसरा नाम ब्रह्माकुमारीज़:नायडू

शान्तिसरोवर रिट्रीट सेंटर का दसवां वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

हैदराबाद। यहाँ पहुँचने के बाद मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ऐसा शान्त आध्यात्मिक वातावरण शायद ही कहीं और होगा। एक भरपूर शान्ति का अनुभव आप सभी को देखने के बाद हुआ। इसके लिए मैं आप सभी का अभिवादन करता हूँ। आज से दस वर्ष पूर्व कुछ लोगों के कहने पर मैं माउण्ट आबू पहुँचा। वहाँ पहुँचने के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ कि दृढ़ता का दूसरा नाम ही ब्रह्माकुमारीज़ है, क्योंकि ब्रह्माकुमारी वाले जिस किसी को भी बदलने का ठान लेते हैं तो तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ते जब तक कि उसके जीवन में परिवर्तन न आये। उक्त उद्गार शान्तिसरोवर के दसवें वार्षिकोत्सव समारोह में आंध्रप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने सभी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा, जब मैं मुख्यमंत्री के पद पर व्यस्त था, ब्रह्माकुमारी बहनें बराबर मेरे पास आकर आग्रह करते थे कि आप एक बार माउण्ट आबू का दर्शन अवश्य कीजिए, दादी जी का आशीर्वाद लीजिए। अतः मैं माउण्ट आबू पहुँचा और वहाँ उस स्थान का 5/6 घंटे निरीक्षण करने के बाद मुझे लगा कि दुनिया के श्रेष्ठतम मैनेजमेंट गुरुओं को भी मात देने वाली ब्रह्माकुमारीज़ की व्यवस्था और प्रबंधन है।

आदरणीय रतनमोहिनी दादी जी ने सभी को नववर्ष की बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आंध्रप्रदेश के इतने लोगों को शान्ति-सरोवर के द्वारा परमात्म संदेश का लाभ मिल रहा है। चंद्रबाबू नायडू इस शान्तिसरोवर स्थापना के निमित्त बने। जिन्होंने इस कार्य को इतना महत्व देकर, परमात्मा के कर्तव्य को समझकर आगे बढ़ाया। जितना यह कार्य आगे बढ़ता रहेगा उसका श्रेय चंद्रबाबू नायडू को मिलेगा। परमात्मा उनसे कार्य करा रहे हैं और आगे भी कराते रहेंगे और सदा उनको परमात्मा से आशीर्वाद मिलता रहेगा।

ब्र.कु.संतोष ने कहा कि पानी के

सरोवर तो दुनिया में बहुत हैं लेकिन यह शान्तिसरोवर बना है खास शान्ति की घ्यास बुझाने के लिए। हमारे दैवी भ्राता मा.मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू जी ने बहुत ही शुभ भावना और स्नेह से यह स्थान दिया। यहाँ आकर अनेक आत्माएं सच्ची शान्ति और शक्ति प्राप्त करते हैं। उन आत्माओं का आशीर्वाद मुख्यमंत्री जी को मिलता रहता है। लाखों आत्माएं यहाँ आकर ज्ञान स्नान करके गति-सद्गति का, परमात्मा से मिलने का रास्ता प्राप्त कर रहे हैं। यह स्थान केवल आंध्रप्रदेश या तेलंगाना के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए लाइट हाउस बनकर के कार्य कर रहा है। शान्ति-सरोवर की निर्देशिका ब्र.कु.कुलदीप ने अपनी भावनायें व्यक्त करते हुए कहा कि जैसे परमात्मा सृष्टि के रचयिता हैं,



माउण्ट आबू में

मैंने देखा कि बड़े-बड़े लोग स्वयं भोजन बना रहे हैं, खुद परोस भी रहे हैं और सफाई भी कर रहे हैं। मुझे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि यह एक अद्भुत संस्था है और समाज में परिवर्तन लाना ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा ही संभव है। अतः मैंने सोचा कि माउण्ट आबू के समान ही हैदराबाद में भी एक बेस्ट सेंटर की स्थापना हो। इस प्रकार का प्रस्ताव मैंने उनके आगे रखा। शहर से दूर गन्धिबाउली का स्थान बहुत ही पथरीला और खड्डों से भरा हुआ था। इस एकांत स्थान पर मैंने सिर्फ इन्फोसिस आय.टी.कंपनी के लिए और इंडियन



हैदराबाद। दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, दादी रतनमोहिनी, वी. ईश्वरैया, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. कुलदीप व अन्य।

स्वर्णिम दुनिया बनाने वाले हैं वैसे ही स्वर्णिम आंध्रप्रदेश बनाने का स्वप्न है शान्तिसरोवर है। वे आध्यात्मिक मूल्यों मा.मुख्यमंत्री जी का आंध्रप्रदेश को उसका पहला साकार मिसाल यह के साथ कार्य करने - शेष पेज 7 पर...

अकादमी फॉर बेटर वर्ल्ड एंड बेटर टुमॉरो नहीं बल्कि बेटर फॉर एवर है-नायडू

स्कूल ऑफ बिजनेस के लिए ही जगह दी थी क्योंकि उनका पेशा काफी तनावग्रस्त होता है। अतः ब्रह्माकुमारीज़ अकादमी के लिए भी यही स्थान मैंने उपयुक्त समझा। इस स्थान पर मैंने 'अकादमी फॉर बेटर वर्ल्ड एंड बेटर टुमॉरो' की अपेक्षा की थी लेकिन यहाँ आकर मैंने देखा कि अकादमी फॉर बेटर वर्ल्ड एंड बेटर टुमॉरो नहीं बल्कि बेटर फॉर एवर है। मुझे बताया गया कि इस पथरीली ज़मीन पर अभी फूलों का उद्यान बनाया गया है लेकिन मैं देखता हूँ कि यह फूलों का उद्यान नहीं बल्कि सोने का उद्यान है। मैंने देखा ब्रह्माकुमारीज़ का जीवन टेन्शन फ्री है

क्योंकि इनके जीवन में कोई अनावश्यक इच्छाएं नहीं हैं। सभी समस्याओं का मूल कारण व्यर्थ इच्छाएं हैं। ब्रह्माकुमारीज़ दूसरों के जीवन में शान्ति और प्रकाश फैलाने का कार्य कर रही है, मैं उनका अभिवादन करता हूँ।

मूल्यों का बोध करनेवाली ब्रह्माकुमारीज़ एक मात्र संस्था यह संस्था महिला प्रधान है। लेकिन पुरुष भी इस संस्था के कार्य में सहयोगी हैं। मैं भी इस संस्था के कार्य में सहयोग देने के लिए तत्पर हूँ। ब्रह्माकुमारीज़ के जीवन में जो खुशी दिखाई देती है उसका मुख्य कारण है कर्तव्य प्रति उनको निष्ठा। मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति व्यस्त रहे,

उसके कर्म शुभ हों, कर्तव्य परायण हों तो उसके जीवन में कभी भी टेन्शन नहीं होगा, अशान्ति नहीं आयेगी। इस प्रकार से मूल्यों का बोध करनेवाली ब्रह्माकुमारीज़ एक मात्र संस्था है। मैं समझता हूँ कि दस वर्ष पूर्व मैंने निर्णय लिया था वह बिल्कुल उचित था। आगे उन्होंने कहा कि आंध्रप्रदेश के 3 जिलों विजयवाड़ा, वैजाग और तिरुपति में भी स्थान देने के लिए तैयार हूँ और चाहता हूँ कि इन तीनों स्थानों पर भी अच्छे रिट्रीट सेंटर का निर्माण हो। साथ-साथ आंध्रप्रदेश के दस जिलों में भी ब्रह्मा-कुमारीज़ संस्था खोलने का निवेदन किया।



हैदराबाद। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को सम्मानित करते हुए दादी रतनमोहिनी, वी. ईश्वरैया, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. कुलदीप व अन्य। सभा में ब्र.कु. भाई-बहनें तथा गणमान्य जन।

परम-आनंद की गहन अनुभूति

सूर्य देव अपनी यात्रा प्रारम्भ कर रहे थे, उनकी सौन्दर्यपूर्ण सुनहरी रश्मियाँ पूर्ण सागर के जल को प्रकाशित कर रही थी। ऐसा लगता था मानो सूर्य की रश्मियाँ सागर को छेदकर आर-पार जा रही हों। सागर में उठने वाली विशाल लहरों की ध्वनि स्तब्धता को चीर कर एक अद्भुत संगीत की रचना कर रही थी... चारों ओर सन्नाटा था। किनारे पर सीना ताने खड़े देवदार के वृक्ष वर्षों से समुद्र की लीला का अवलोकन करते आ रहे थे, किनारे नैसर्गिक पुष्पों के सौन्दर्य से सुशोभित थे। ऐसे एकान्त में इस प्रकृति-सौन्दर्य से योगेश का मन आनंदकारी विचारों की लहरों में लहराने लगा। योगेश स्व-चिंतन के आनंद में खोने लगा... उसके मन से आवाज़ गूँजी...

योगेश, तुम पर भगवान को दृष्टि है... वह तुम्हें कुछ बनाना चाहता है... क्या तुम्हें उसकी महान आकांक्षाओं का एहसास है... देख, तुम्हें दर्शनीय मूर्त बनाने के लिए भगवान स्वयं प्रस्तुत है... और वह अनसूखता की गुफा में तल्लीन हो गया... वह खो गया काल के भान से परे... सभी



संकल्प तल्लीनता के प्रकाश में लोप से हो गए....

विचार प्रवाह पुनः उमड़ा... जब भगवान की नज़र इस विश्व पर पड़ी तो उसकी प्रथम किरण ने ही तुम्हारा जीवन आलोकित कर दिया... उसकी नज़रें तुम पर आकर ठहर गईं... उसने तुम्हें पसंद कर लिया... उसे न विद्वान पसंद आये और न ही धनवान... उसे प्रिय लगे तुम, क्योंकि तुम में पवित्रता के बीज थे... जिन्हें उसे अंकुरित करना था...

योगेश... जिस पर भगवान की नज़र हो, उसकी नज़र किसी देहधारी पर नहीं जा सकती, जिसे भगवान का साथ मिला हो उसकी नज़र सांसारिक वैभवों में अटक नहीं सकती... फिर तुम कहीं देखते हो... क्यों छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ति में अपना अनमोल जीवन गंवा रहे हो। और इस प्रकार उसका विवेक जागा... तुम्हारे भ्रम हो गई, मन वैराग्य से परिपूर्ण हो गया... उसे सत्य का बोध हुआ...

सच, भगवान को पाकर... उसकी छवि को निहार कर... उसके प्रत्येक कर्तव्य को देखकर... विनाशो प्राप्ति के पीछे अधिकार में भटकना, यह तो जैसे कि भगवान का भी निरादर करना है... तब भला तुम्हें आदर कैसे प्राप्त होगा...

मधुवन में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में देखे गए अनेक दिव्य दृश्य उसके

मानस पटल पर उभर आए... चेहरा खिल उठा...

अहा!... तुम्हारे भाग्य का गुणगान करके तो भक्त भी प्रसन्न होते हैं... तुमने इन आँखों से भगवान को कर्म करते देखा... शिव को अपना झण्डा लहराते देखा, अशोकता को भोजन स्वीकार करते देखा... मनुष्यों की तरह दीपक जलाते देखा... गोप-गोपियों की रास निहारते देखा... प्यार के सागर का प्यार भी छलकते हुए तुमने देखा... ज्ञान सागर को ज्ञान बंसी बजाकर सभी के दिल को चुराते भी देखा... तुम्हारा जीवन धन्य धन्य हो गया योगी...

स्मरण करो- तुम्हारा यह जीवन भगवान के साथ बीता... तुम उसके साथ खेले... तुमने उसके साथ खाया... बोले, और तुम्हें क्या चाहिए... फिर क्यों संसार में इतना विस्तार किया है? तुम्हारी बुद्धिमानी तो इसी में है कि इस भाग्य को इतना बढ़ा लो जो तुम खुले हाथ भाग्य बाँट सको। कहीं ऐसा न हो जब अनेक भिखारी भाग्य मांगने तुम्हारे द्वार पर आएँ तो तुम अपने को ही खाली हाथ पाओ...

इस तरह स्व-चिंतन के संकल्प योगेश को परम आनंद की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति कराने लगे। उसकी गति धीमी पड़ गई... मानो देह प्रकाशमय हो गई... उसे लगा कि इस संसार में उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं...

सहसा उसकी दृष्टि सागर पर दूर-दूर पड़ी। उसे लगा मानो सागर भी उसकी बुद्धि पर खिल खिलाकर हँस रहा हो... जैसे कि वह अपनी मूक भाषा में कह रहा हो... दे योगी... तुम भगवान को पाकर भी सन्तुष्ट नहीं हुए... भगवान को देखकर भी तुम्हें और क्या देखने की तमन्ना है... भगवान की दिव्य छवि देखकर भी तुम मग्न नहीं हुए... अभी मैं तुम पर हँस रहा हूँ और अंत में यह सारा संसार तुम पर हँसगा...

भगवान ने तुम्हारा हाथ अपने हाथ में थाम कर कहा... तुम अब मेरे हो... मेरे हवाले हो जाओ... और यह भी न भूलना कि मैं भी तुम्हारा हूँ... इतना ही नहीं, मेरा जो कुछ भी है वह तुम्हारा ही है... मैं तुम्हारे लिए ही तो आया हूँ... वत्स, कब से मेरी नज़रें तुम पर थीं... मैं तुम्हारे लिए अखुट खजाने लाया हूँ... मेरे सब वरदान तुम्हारे लिए हैं... जो चाहो, वरदान ले लो... मेरी सारी शक्तियाँ तुम्हारी ही हैं... स्वयं को जितना चाहो बलवान बना लो... मेरा सम्पूर्ण ज्ञान तुम्हारा है... स्वयं को जितना चाहो बुद्धिमान बना लो... मेरा सम्पूर्ण सुख, शान्ति व खुशियाँ तुम्हारी हैं... स्वयं को जितना चाहो

खुशानसीब बना लो... सब खजाने तुम्हारे लिए हैं... स्वयं को जितना चाहो साहूकार बना लो...

तो उठो, अपनी झोली भर लो... देखना कहीं तुम्हारी झोली खाली न रह जाए... तुम अधिकारी हो, अपने अधिकारों को जानो, उन्हें लेना सीखो। तुम अधिकारी होते हुए भी अब तक खजानों की खोज में हो... यह भी कैसी बुद्धि है तुम्हारी... अपनी बुद्धि को दिव्य करो योगी...

सागर पर पड़ती किरणों से उत्पन्न सुनहरा प्रकाश देखकर उसे लगा कि सागर पुनः मुस्कया है... उसके गायन योग्य भाग्य को देखकर...

देखो योगी... श्रेष्ठ भाग्य की तो बात ही क्या... स्वयं भगवान विधाता ही तुम्हारा है... भाग्य की रेखा खींचने की कलम भी तुम्हारे हाथ में है... क्या तुमको भाग्य की अविनाशी रेखा खींचनी नहीं आती... जरा अपने वर्तमान व भविष्य को तो देखो, अब तुम प्रभु की शीतल छाया में चैन की बंसी बजा रहे हो... और तुम्हारा भविष्य... वाह! विश्व महाराजना का तख्त तुम्हें ही सुशोभित करना है... प्रकृति तुम्हारी सेविका होगी... फिर भी तुम आनंदित क्यों नहीं हो... तुम्हारा चेहरा फूल-सा खिला क्यों नहीं रहता है... श्रेष्ठ भाग्य की झलक तुम्हारे मस्तक की सलवटें क्यों दूर नहीं करती...

योगेश को एक बार फिर से अपने चमकते हुए भाग्य के सितारों के दर्शन हुए... तब ही से उसे अपने अतीत की यादें आने लगीं...

योगेश, एक दिन था, तू सत्य की खोज में भटका करता था, जब तेरी आँखें प्रभु दर्शन की बाट निहारा करती थीं, जब तेरे मन में एक तड़पन थी, जब तू सोचता था बस कहीं भगवान को एक झलक दिख जाए, सर्वस्व बलिहार कर दूँ... जब तू गाया करता था... हे प्रभु, अब और इंतजार न कराओ... अब आओ... हमारी प्यास बुझाओ, ये अँखियाँ तुम्हारी राह तक-तक कंधे चुकी हैं... इस मिलन के बदले में चाहे तू हमसे हमारे प्राण भी ले लेना... बहुत देर की है... तुम एक बार आ जाओ... हम गिन-गिन के हिसाब लेंगे...

अब ले लो गिन-गिन कर हिसाब... देखो, वह तुम्हारा दोस्त बनकर तुम्हारे पास आया है... तुम उसकी प्रीत में गीत गाते थे, अब उससे प्रीत निभाओ... वह तुमसे सच्ची दोस्ती निभा रहा है। परंतु तुम उसकी दोस्ती में क्या कर रहे हो... क्या तुम उसकी दोस्ती का पूरा लाभ उठा रहे हो...

अब सत्य तुम्हारे पास है... स्वयं भगवान ने तुम्हें आकर पढ़ाया, तुम्हें भला ऐसे और कोई पढ़ा भी कहाँ सकता था। और किसी के पास तो तृप्ति हुई भी नहीं थी। अब उसने तुम्हारी सभी भटकने दूर कर दीं।

उसके मानस-पटल पर ईश-मिलन की सभी यादें उभर आईं।

ओह! यह प्रभु मिलन, जिसका मुझे युगों से इंतजार था... आह! इस मिलन का अनुभव सुख... इस सुख के समक्ष समस्त वैभव मिट्टी तुल्य है... इसी सुख का वर्णन करते-करते शास्त्र भी थक गए। यह सुख तुमने अनेक बार पाया है... आश्चर्य... लोगों की तमन्ना है कि यह मिलन हो, परंतु उन्हें पता नहीं कि कैसे हो... हमें ज्ञात है, सब कुछ ज्ञात है... फिर भी हम भी इस रस को निरंतर - शेष पेज 8 पर...



जलगाँव। महा. के राजस्व मंत्री एकनाथराव खडसे को नए वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए ब्र.कु. तेजल।



पैसूर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन मेला' का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए देशीकेन्द्र स्वामी जी, सुतुर मठ तथा विधायक बी.पी. पाटिल।



विलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। 'सात अरब सत्कर्माँ की महायोजना' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, छ.ग. लघु व्यापार एवं उद्योग समिति के अध्यक्ष हरीश केडिया, डॉ. गीता त्रिपाठी, डायरेक्टर केयर स्कूल, ब्र.कु. सविता तथा अन्य।



भिलाई-छ.ग.। सेंट थॉमस कॉलेज में कौमी एकता सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. गीता को सम्मानित करते हुए कॉलेज के डायरेक्टर।



सूरत-अडाजन। नेशनल एन.सी.सी. कैम्प के कैडिडेट्स को 'सेल्फ डिसेप्लिन' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रुशी।



रीवा-मऊगंज। नवनिर्वाचित नगर पंचायत अध्यक्ष चन्द्रप्रभा गुप्ता को बधाई देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लता तथा बेबी बहन।



मुम्बई। सूचना एवं प्रसारण मंत्री माननीय प्रकाश जावड़ेकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. बिनी। साथ है ब्र.कु. डॉ. लीना।



पुणे-भोसरी। सेवाकेन्द्र की 27वीं सालगिरह पर केक कटिंग करते हुए ब्र.कु. जयती तथा अन्य।



कालीकट-केरल। 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भगवान,माउण्ट आबू। साथ है समुद्री राजा, ब्र.कु. जेलजा, ब्र.कु. सेलजा, ब्र.कु. अनिल तथा अन्य।



वैंगलोर। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' की लॉन्चिंग करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री आर.वी. देशपाण्डे,कर्नाटक सरकार, शरणप्रकाश रुद्रपा पाटिल,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर मंडिकल एज्युकेशन,कर्नाटक सरकार, ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी दादी सरला, ब्र.कु. सरोजा, ब्र.कु. पदमा तथा ब्र.कु. सुरेन्द्रन।



इन्दौर-सारंगपुर। 18 जनवरी स्मृति दिवस पर आयोजित विश्व शांति दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महेश शर्मा,लायंस क्लब, ललित पालीवाल,समाजसेवी, रमेशचन्द्र जोशी,प्रिन्सिपल,हायर सेकेन्डी स्कूल, डॉ. कुलदीप भल्ला, प्रेम नारायण राठीर,पूर्व सी.एम.ओ., सत्यनारायण शर्मा,समाजसेवी, ब्र.कु. विजय लक्ष्मी तथा नीरज चतुर्वेदी।



राजगढ़। कैथोलिक चर्च द्वारा आयोजित क्रिसमस मिलन कार्यक्रम में मंचासीन है फादर सज्जी,जिला पंचायत, सतीष वर्मा,सी.ई.ओ., मोना सुस्तानी,जनपद सदस्य, संजीव सक्सेना,जिला समन्वयक, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।

बहुत काम का है न्यूटन का तीसरा नियम

बचपन में स्कूल की भौतिक विज्ञान वर्ग में हम सभी ने विश्व के महान गणितज्ञ एवं भौतिक वैज्ञानिक न्यूटन के गति नियमों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। उनके तीन गति नियमों में से जो तृतीय नियम है, वह इस प्रकार है कि 'प्रत्येक क्रिया की सदैव बराबर एवं विपरीत दिशा में प्रतिक्रिया होती है।' यह सिद्धांत हम मनुष्यों के लिए बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हर प्रकार से हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है। जी हाँ! यह तो स्वाभाविक ही है कि 'जैसा हम देंगे, वैसा हम पाएंगे।' मसलन, यदि हम आम का पौधा लगाते हैं, तो उससे हम संतरे की उम्मीद तो नहीं कर सकते हैं न! ठीक इसी प्रकार यदि हम किसी का अपमान करते रहें और बदले में उनसे सम्मान की अपेक्षा रखें, इसे क्या कहेंगे? इसका उत्तर तो हम सभी के पास ही है (हम देखते हैं कि कुछ लोग बहुत कम समय में अपनी मेहनत और लगन से वह मुकाम हासिल कर लेते हैं, जिससे उन्हें सर्व का सम्मान और प्यार मिलता है। परंतु उनकी तरक्की व प्रकृति को देखकर

लोग यह एक मुख्य बात भूल जाते हैं कि आज वह जो कुछ भी है, वह उनके पिछले कार्यों के परिणामस्वरूप है।

अतः मानवीय दृष्टिकोण से न्यूटन के इस



यदि हमने मनचाहे फल को प्राप्त करने के लिए सही बीज नहीं बोया तो उसके आगे फिर धरती माँ भी कुछ कर नहीं सकती।

तृतीय नियम से हमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझनी चाहिए कि 'एक उज्ज्वल भविष्य समझनी चाहिए कि 'एक उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए चयन करने का अधिकार

हमारे पास है, क्योंकि बीज हमारे हाथों में है।' इसलिए यह संपूर्ण रीति से हम पर निर्भर करता है कि हम क्या बोएं और कैसा बोएं क्योंकि माँ प्रकृति का भी यह नियम है कि यदि हमने अपने मनचाहे फल को प्राप्त करने के लिए सही बीज नहीं बोया तो उसके आगे फिर धरती माँ भी कुछ कर नहीं सकती है। इस नियम के साथ-साथ हमें एक और संस्कार भी अपने अंदर धारण करना होगा, जो है 'दातापन की वृत्ति।' स्मरण रहे कि जब तक हम प्रकृति को कुछ देंगे नहीं, तब तक बदले में हमें कोई प्राप्ति भी होगी नहीं। इसलिए जब हम सही बीज बोने का कार्य करेंगे, तब बदले में धरती माँ भी बड़ी उदारता से हमारी झोली अपने मनचाहे फलों से भर देगी।वर्तमान समय की भी यही पुकार है कि हम अपने मन की मिट्टी को इस कदर जोतें कि उससे हमारे भीतर से अवांछित भावनाओं रूपी जंगली घास एवं हमारे जीवन में आने वाले अवांछित परिणामों से हम सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाएं। याद रखें कि अपने मन के मालिक हम खुद हैं।

कल्पनाशीलता से निकल वास्तविकता में जीयें

प्रश्न:- मान लो मैं बहुत गरीब हूँ, मेरे घर में सब अस्त-व्यस्त है, मेरे जीवन में संकट आया हुआ है जिसका मैं कुछ भी नहीं कर पा रही हूँ तो ऐसे समय पर भी मैं अपना कर्म तो करती ही रहूँगी लेकिन मैं भविष्य की चिंता के कारण वर्तमान में खुश नहीं रह पाती हूँ। कारण अभी मैं जो चाह रही थी वो नहीं हो रहा।

उत्तर:- इसको हम कहेंगे कल्पना करने वाला व्यक्तित्व। आप अभी यहाँ हैं लेकिन यहाँ आप कल में हैं। आप ऐसे व्यक्ति हैं जो आने वाले कल में ज्यादा रहते हैं। जिसको हम कहेंगे कि ये तो ख्वाबों में ही रहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि हम ख्वाबों में क्यों रहते हैं? क्योंकि उनको 'आज' पसंद नहीं है।

अभी मेरे अंदर दर्द है। मैं उस दर्द के ऊपर काम नहीं करना चाहती हूँ लेकिन मैं इससे अच्छा फील करना चाहती हूँ, तो इसके लिए मैं क्या करती हूँ, चाहे टी.वी. देखती हूँ, चाहे छुट्टियों पर चली जाती हूँ। अभी जो दर्द वाली थॉट है, इसको थोड़ी देर के लिए नजरअंदाज कर देती हूँ जिससे कि मैं अच्छा अनुभव करूँ। जितनी देर मैं भविष्य के बारे में सोचती हूँ, मान लो पंद्रह मिनट अभी मैं बहुत दर्द में हूँ लेकिन मैंने माइंड को अपने अगले साल में शिफ्ट कर दिया और मैं भविष्य के बारे में सोचती रही। तो पंद्रह मिनट क्या हुआ?

वर्तमान में मैं अपने दर्द वाले थॉट्स से दूर हो गई और मैं भविष्य की कल्पनाओं में खो गयी, इससे बाद मुझे अच्छा अनुभव हुआ।

प्रश्न:- इससे हम तरौताजा महसूस करते हैं।

उत्तर:- तरौताजा महसूस करते हैं! नहीं, नहीं, क्योंकि उससे भी ज्यादा दुःख के साथ मैं वापिस आती हूँ। क्योंकि ये अभी तो नहीं है लेकिन थोड़ी देर में आ जायेगा। जो भी हम कहते हैं ना कि अतीत की स्मृति, चलो आज

बहुत दर्द में हैं लेकिन पिछला साल बहुत अच्छा बीता था। चलो पिछले साल को याद करके मुझे अच्छा लगता है, दस मिनट याद कर रहे थे बहुत अच्छा लगा, ग्यारहवां मिनट क्या हुआ, दर्द हो गया लेकिन अभी वो तो नहीं है ना। दर्द वर्तमान में है तो मुझे उसको ठीक भी कहाँ करना पड़ेगा? उसका सामना यहाँ ही अपने मन में करना पड़ेगा। यदि मैं दर्द से भागती रहूँ तो इससे दर्द ठीक नहीं होगा, यह कोई समाधान नहीं है। यह तो बीमारी है, इसे ठीक करना चाहिए न कि इससे भागना चाहिए।

क्या ख्वाबों की दुनिया में जीने से आपका दर्द या बीमारी ठीक हो जायेगी? आज अगर उसको ठीक नहीं किया तो आप सोचते भी रहें कि ये कल ठीक हो जायेगा, तो क्या वो ठीक हो जायेगा? आज अगर हम दर्द में हैं, आज हमने अपने थॉट्स को ठीक नहीं किया तो कल कौनसी थॉट्स होगी? वही दर्द वाली होगी। परिस्थितियाँ बदल जायेगी, हम क्यों कल के बारे में सोचते हैं? क्योंकि हमने सोचा कि खुशी परिस्थितियों पर निर्भर है। आज परिस्थिति ठीक नहीं है, मैं दर्द में हूँ, लेकिन मैं आशा करती हूँ कि कल परिस्थिति ठीक हो जायेगी और मैं यह निष्कर्ष निकाल लेती हूँ कि परिस्थिति ठीक हो जायेगी तब मैं खुश हो जाऊँगी। जैसा आपने कहा कि कोई बहुत गरीब है, आज उसके पास धन नहीं है, हो सकता है जैसे वो किसी परिस्थिति का सामना कर रहे हों, कल उनके पास बहुत धन आ जाये, बेरी गुड। इसका यह मतलब नहीं है

कि उनके पास खुशी भी आ जायेगी। खुशी मन की रचना है। हमें उसे हर पल अनुभव करना होगा। अगर हमने आज उसको क्रियेट नहीं किया, क्योंकि यह तो सीरिज ऑफ थॉट के रूप में आते हैं। अगर मेरा यह थॉट दर्द का है तो मेरा अगला थॉट स्वतः ही दर्द का आयेगा। इसलिए आज हम कहते हैं कि आज भी कहाँ करना पड़ेगा? उसको ठीक नहीं किया तो कल, कल तो स्वतः ही दर्द के थॉट आयेगी। आप कितना भी सोचते जाओ बहुत अच्छा हो जायेगा, बाहर तो अच्छा हो जायेगा लेकिन अंदर! अंदर तो फिर भी दर्द क्रियेट होगा।

प्रश्न:- ये कहा जाता है कि स्वप्नों में रहना चाहिए या सपने कम से कम देखने चाहिए। दो में से कोई एक व्यक्तित्व सही है, इसका सही रास्ता क्या है? क्या यह सही है?

उत्तर:- आप वर्तमान के बारे में पूछ रही हैं। फेटेसाइजिंग बहुत ज्यादा भविष्य के बारे में और एक्केपिंग फ्रॉम द प्रेजेंट। फिर से मैं अपनी एनर्जी को, अपनी क्षमता को उस चीज को क्रियेट करने में उपयोग कर रही हूँ जो कि मेरे कंट्रोल में है ही नहीं। मेरे कंट्रोल में सिर्फ वर्तमान समय है। इसके अलावा मेरे कंट्रोल में कुछ भी नहीं है।

प्रश्न:- नवीनता को कहा जाता है कि आप स्वप्न क्रियेट कर रहे हो?

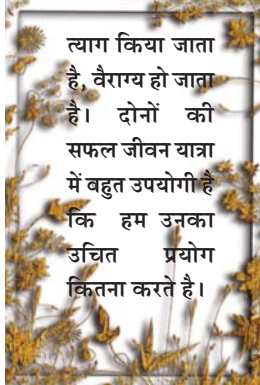
उत्तर:- आप सही दिशा में क्रियेट करो। आप आज से क्रियेट करते जाओ। आज से आपका कल स्वतः ही अच्छा होगा। आज आप अच्छा क्रियेट कर रहे होंगे, घर पहुँचेंगे, सबके साथ अच्छे होंगे, रात को नींद अच्छी आयेगी, कल सुबह उठोगे तो अच्छा ही फील करेंगे। यदि आज का समय चिंता में बिता दिया तो कल क्या होगा? तो कल भी चिंता ही होगी।



ब्र.कु. शिवानी

त्याग के मायने

प्रश्न: आपके लिए त्याग का क्या अर्थ है? उत्तर: जब बच्चों को कुछ अच्छा मिलता है, तो वे पहले की छोटी वस्तुएं त्याग देते हैं, ऐसे ही कमियों और निगेटिविटी का त्याग चलते रहना चाहिए, ऐसा नहीं है कि हम एक बार त्याग देते हैं तो वह खत्म हो जाता है। जब हमारे पास किसी बात को त्यागने का काम करने के लिए समझ, हिम्मत और शक्ति होती है तो हम बहुत उमंग में आते हैं और तभी परीक्षाएं आती हैं।



पहले तो यह समझना पड़ेगा कि किसी बात को क्यों त्यागना चाहते हैं? यह समझ अपने दिल में बहुत क्लियर होनी चाहिए और उसे त्यागना आपके लिए आवश्यक होना चाहिए। हम त्याग का निर्णय तो कर लेते हैं किन्तु समय प्रति समय हम देखते हैं कि बातें बार-बार अलग रूपों में उभर कर आती हैं और तब हम पहचानते हैं कि अभी त्यागना बाकी है। त्याग बिना कारण नहीं होता। जो हम सीख रहे हैं, यदि आप उसकी फिलॉसॉफी देखें-स्वयं को स्वीकारना कि मैं आत्मा पहले एक पवित्र आत्मा थी और उसमें कोई कमियां या निगेटिविटी नहीं थी- इस लिए उन्हें त्यागने की आंतरिक इच्छा होती है। तो हम पहले त्याग करने की हिम्मत रखने का सोचते हैं और फिर कोई हमें उसे बाबा को दे देने के लिए प्रेरित करता है, एक कागज का टुकड़ा लेकर बाबा को लिख दो, एक बार उसे बाबा को दे दिया, तो बाबा आपको प्रोत्साहन दिलाते कहता है कि उसे वापस न लें और यदि वह आ भी जाए तो दोबारा बाबा को दे दें। बाबा का बार-बार आह्वान करें, ताकि आपके दिल में और आपके मन में बाबा की उपस्थिति हो और आपके पास उस बात को त्यागने की हिम्मत और शक्ति हो। ऐसे यह प्रक्रिया शुरू होती है।

प्रश्न: त्याग के लिए आंतरिक शक्ति और हिम्मत चाहिए होती, समय कम है। अपनी यात्रा से क्या कोई शॉर्ट कट है, वैसे यह एक लम्बी प्रक्रिया है?

उत्तर: अपनी यात्रा के बारे में बात करते हुए मैं आपको यह बता सकता हूँ कि हम पहचान जाते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा नहीं है और उसे त्यागने का निर्णय लेते हैं। थोड़ी सी कुछ सूक्ष्म बातें हैं जो हमें यह समझने से रोकती हैं कि कोई बात क्यों हुई। आप अपने

क्रोध को त्यागने का संकल्प करते हैं या अपनी कोई बहुत ही प्रिय वस्तु को ममत्व को त्यागने का निर्णय लेते हैं और जब आप निर्णय लेते हैं तभी एक टेस्ट (परीक्षा) आता है। वह उसी मूल कारण से किसी न किसी रूप में आता है इसलिए उसे पूरी तरह त्यागने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। फिर एक दिन ऐसा आता है जब आप अपने मन और अपने दिल में निर्णय कर लेते हो कि यह चीज आपके लिए अच्छी नहीं है। आपने प्रगति की इतनी मेहनत की है और थोड़ा सा फिसलने से इतना खो देते हैं, प्रगति के लिए फिर एक्सट्रा पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। कभी-कभी आपके अपने ही संस्कार रुकावट बन जाते हैं। जब आपका किसी से ममत्व होता है तो उसके संस्कार एक रुकावट बन जाते हैं। कभी-कभी अपनी ही अज्ञानता या ज्यादा कॉम्प्लेक्स के कारण भूलें करते हैं। अगर आप सोचें कि समय कम है, फिर भी यह एक लम्बे समय तक सीखने की प्रक्रिया है। यह सीखने में समय लगता है कि आखरीन हमें अपने जीवन में एक ठोस निर्णय लेना होगा और जब वह अटलता आ जाती है तो समस्या हल हो जाती है। यह एक बार स्वीकार हो जाए तो समस्या का समाधान हो जाता है। अपने जीवन में, हम एक ही जीने का तरीका, एक ही संकल्प, एक ही रास्ते पर सफर कर सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं चलता है। हमें वैरायटी को स्वीकार करना होगा।

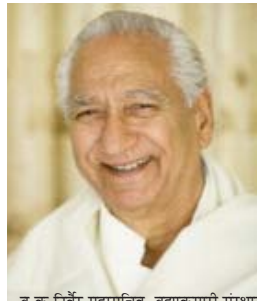
प्रश्न: वैराग्य का पूरा पहलू और अटल होना - सुनने में काफी सख्त और भारी लगता है। उसमें स्नेह कहाँ पर आता है?

उत्तर: बाबा के लिए, स्व के लिए और अन्य आत्माओं के लिए स्नेह है। किसी के लिए स्नेह हो तो स्नेह के कारण बलिदान करते हैं, यदि हम अपने को प्यार नहीं करते तो हम अपने लिए कुछ भी बलिदान नहीं करेंगे। पवित्र प्रेम आवश्यक है।

प्रश्न: त्याग से जुड़ा हुआ वैराग्य। यदि हम वैराग्य का शब्दावाद करें, तो वैराग्य का अर्थ होगा किसी भी बात में रुचि नहीं।

उत्तर: सन्यासियों को देखते हुए हम यह मानते हैं कि उन्होंने संसार का त्याग किया है, जबकि हम संसार में हैं। हम अपने कार्यालयों में जाते हैं, कमाते हैं और खर्चते हैं लेकिन जीवन के इस आध्यात्मिक पहलू को समझकर कि हमने अति सुंदर वस्तु पायी है, संसार या किसी कार्य (जॉब) को त्यागने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि हम किसी अन्य तरीके से सेवा नहीं कर रहे हों। हमें अपने कार्य (जॉब) और अपने सम्बन्धों से वह आनंद लेने चाहिए जो अस्थायी या अल्पकालिक न हों।

यदि आप अपने संकल्पों और कर्मों के दृष्टा बन सकें, आप देखेंगे कि जब आपके संकल्प आध्यात्मिक मूल्यों के अनुचित, यथार्थ होते हैं, तो आप उससे बहुत आराम और चैन महसूस करेंगे और अन्य भी आपके साथ बहुत आराम महसूस करेंगे। जैसे ही किसी क्षण कोई बदलाव होगा (कोई निगेटिविटी बहुत सूक्ष्म रूप में आ जाती है) तो वह आपके मन में एक हलचल पैदा करना शुरू करती



-ब्र. कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारी संस्थान

है। वह चैन चला गया, वह खुशी का मूड चला गया, आपको आँखों में वह खुशी की मुस्कराहट चली गयी। उस समय एक पावरफुल ब्रेक की जरूरत है और बाबा का तुरंत ही आह्वान करने का सबसे आसान तरीका है : बाबा, मेरे मन में यह संकल्प आ रहा है, बाबा, यह संकल्प आ गया है और यह अच्छा नहीं है। जब आप इस तरह सोचेंगे, बाबा उस संकल्प को भी ले जायेगा और आपकी उत्कंठा को भी ले जायेगा। यह बहुत सूक्ष्म और बहुत आवश्यक है और हर पल मदद कर सकता है। धीरे-धीरे बाबा से तालमेल में रहना स्वाभाविक (नैचुरल) हो जायेगा और वह मुस्कराहट सदा आपकी आँखों में होगी।

प्रश्न: मैं यह कैसे पक्का करूँ कि मैं अपनी कमजोरियों को दबाऊँ नहीं? मुझे उनका आभास है और मैं दबा रहा हूँ।

उत्तर: अपनी कमजोरियों को एक कागज के टुकड़े पर लिखो और बाबा के हवाले कर दो। बाबा को दे दो तो वह जाने। आसान है। जब कुछ हो तो बाबा का आह्वान करो: बाबा, मेरी यह समस्या है, मुझे क्या करना चाहिए? आपको उत्तर मिल जाएगा। उस कागज के टुकड़े को बाबा के कमरे के डब्बे में डाल दो, यदि उनमें से कोई कमजोरी मन में दोबारा निकले तो फिर बाबा को मूरत का अपने मन की आँखों में आह्वान करो और बाबा से शेर करो कि वह आपने पहले से ही उन्हें दे दी है। उन्हें हटाने के लिए एक हफ्ता लगेगा और फिर तब से आप एक फरिश्ते की तरह सदा उड़ते रहेंगे - किसी भी बोझ के बिना।

प्रश्न: मेरे लिए ममत्व त्यागना सबसे मुश्किल काम है क्योंकि मैं सम्बन्धों को स्नेह प्रकट करने का एक साधन समझता हूँ। सम्बन्धों में प्यार बनाये रखते हुए मैं ममत्व को कैसे छोड़ सकता हूँ?

उत्तर: एक साथ भोजन करें, चिट-चैट करें और परिवर्तन होता हुआ देखें। उनके साथ समय बिताना ठीक है और यदि आप ऊँचे-ऊँचे विचार रख सकते हैं, तो उससे वातावरण और वायब्रेशन बनेगा। फिर उन रिश्तों से अपने को बचाने के बजाय साथ रहना ज्यादा आरामदायक होगा। जितना-जितना हम ममत्व को त्यागने का सोचते हैं, वह और ही बुरा हो जाता है। हमें बहुत रिलैक्स और नैचुरल रहना है। यदि कोई आपको फोन करता है, तो सुनिए और अच्छी तरह बोलिए और यदि आप उन्हें फोन करना चाहते हैं, तो करिए। आदान-प्रदान करना ममत्व नहीं है। अच्छे लोग आदान-प्रदान करते समय अच्छी बातों के बारे में बात करते हैं। हम उन बातों के बारे में बात नहीं करेंगे जो हमारे लिए अच्छी नहीं हैं।



नागपुर-महा.। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महानगर संचालक के पद पर निर्वाचित होने के बाद सेवाकेन्द्र आने पर उन्हें गुलदस्ता भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र. कु. पुष्पारानी, ब्र. कु. करुणा, माउंट आबू तथा अन्य।



गोवा-मडगांव। ग्रामविकास तथा वित्त मंत्री दीपक केशरकर को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र. कु. सुरेखा। साथ हैं कोंकण रेलवे के एम.डी. भाूप्रताप तायल तथा अन्य।



गोवा-मालवन। विधायक वैभव नायक को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र. कु. सुरेखा। साथ हैं ब्र. कु. वर्षा तथा अन्य।



मुम्बई-वोरीवली। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना तथा हर घर में परमात्मा का परिचय' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र. कु. प्रफुल्ला। मंचासीन हैं पूर्व विधायक व नगरसेवक बबन नाईक, अरिहंत गुप एंड ग्रेट एस्क्रेप वाटर पार्क के चेयरमैन भारत गुप्ता, डी.वाई.एस.पी. वीरेन शाह तथा ब्र. कु. दिव्यप्रभा।



मुंदरा-कच्छ(गुज.)। आशापुरा कंपनी में 'स्ट्रेस फ्री लाइफ बाइ स्त्रीच्युअलिटो' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डी. कुशावाहा, जी.एम. वर्क्स, मनीष पटेल, सिनियर मैनेजर, एच.आर., ब्र. कु. सुशीला, ब्र. कु. राजेश तथा अन्य।



उमरेंड। 'मेरा उमरेंड स्वथ उमरेंड' कार्यक्रम के अंतर्गत मंच पर उपस्थित हैं ब्र. कु. डॉ. सचिन परब, डॉ. शिरीशा मेश्राम, डॉ. रेतकर, डॉ. गभने, डॉ. शंडवरे, ब्र. कु. रेखा तथा अन्य गणमान्य डॉक्टर।



हिंगोली-महा.। विधायक थाहणाजी मुताकुले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अरुणा।



केश्रीद-गुज.। 'यात्रा खुशनुमा जीवन की ओर' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं डॉ. गजेरा जी, जादुगर चिराग भाई हकुभा, योगाचार्य दुष्यंत मोदी, ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. रूपा तथा अन्य।



इन्द्रौर-महेश्वर। 'ईश्वरीय निमंत्रण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्ष दामोदर दास महाजन, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. नारायण तथा अन्य।



पंढरपुर-महा.। विश्वशान्ति गुरुकुल के सालगिरह पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रार्थना करते हुए प्रिन्सोपल सुनीता जी, प्रोजेक्ट डायरेक्टर प्रसाद जी, संगीतकार आम्माजी, संस्थापक कराड जी, ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. उज्ज्वला तथा अन्य।



धोपाल-सारनी। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र 'प्रभु उपवन' के उद्घाटन अवसर पर आयोजित 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अवधेश, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. नीता, ब्र.कु. शैला, ब्र.कु. पंचशिला, ब्र.कु. निर्मला तथा ब्र.कु. प्रतिभा।



बैंगलोर-कुमारा पार्क। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केम्पन जी, समाजसेवी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, ब्र.कु. तुलसी तथा अन्य।



रशिया -सेंट पीटर्सबर्ग। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' की लॉन्चिंग कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग के पश्चात् उपस्थित हैं पेवेल सोल्टन, डिप्युटी चेरमैन, सेंट पीटर्सबर्ग पार्लियामेंट, एलेना बेरेजनाया, साल्ट लेक सिटी ओलम्पिक चैम्पियन, फिगर स्केटिंग, ईवन क्रास्को, थियेटर व फिल्म कलाकार, फादर रोमन, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।

दिल रूपी दीद से दीदार करो

सामान्यतः मनुष्य मन व बुद्धि में जीता है। मन में जीना तनाव को जन्म देना है और बुद्धि में जीना पांडित्य में वृद्धि करना है, पुस्तकीय ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। जीवन का आनंद और उत्सव न तो मन में है और न बुद्धि में है। हमने बड़े-बड़े बुद्धिमानों को बुद्ध बनते देखा है और बुद्ध-से दिखाई देने वाले कभी-कभी अति बुद्धिमानों की बात कर जाते हैं। आपको आनंद और उत्सव का आस्वादन करना है, तो मैं आपके भीतर के अज्ञात सागर की ओर आमंत्रण देता हूँ।

वह अज्ञात सागर मनुष्य के ठीक मध्य बिंदु में है। मन और बुद्धि तो परिधि पर है, नाभि भी परिधि पर है। सागर का केन्द्र है मनुष्य का हृदय। हृदय जब नीचे की ओर बहता है, तो वह विकार का रूप ले लेता है। यह एक परिधि हुई। हृदय जब ऊपर बढ़ता है, तो बुद्धिमय होता है, यह है दूसरी परिधि। मनुष्य के लिए प्रज्ञा परिधि और हृदय मूल केन्द्र है। जब व्यक्ति हृदय से जीता है तो महसूस होता है कि उसके सिर तो है ही नहीं। मैं यही चाहता हूँ कि व्यक्ति सिर-विहीन होकर हार्दिक हो जाए, बुद्धि से तुम दूसरों के प्रश्नों का समाधान कर सकते हो, लेकिन हृदयवान होने पर सारे सवाल ही तिरोहित हो जाएंगे। तुम्हारे पास प्रश्न ही नहीं होंगे, बल्कि तुम स्वयं ही एक समाधान हो जाओगे, उत्तरों के उत्तर, जवाबों के जवाब। प्रज्ञा के द्वारा मन को जीतेंगे, प्रज्ञा से प्रश्नों के उत्तर देंगे और तर्कों को काटेंगे, पर हृदय से अन्यों को और करीब लाएंगे। हृदय से एक सेतु बनाएंगे। हम हृदय में उस संवेदनशीलता का निर्माण करेंगे, जिसकी आज के जमाने में मृत्यु हो चुकी है।

अगर हृदय के द्वार नहीं खुलेंगे, तो जीवन अंधकारमय है। फिर चाहे मन कितना ही मौन क्यों न हो या बुद्धि अपनी पूरी गहराई पर हो। हृदय में उतरे बिना जीवन में सरसता नहीं आएगी। मन और बुद्धि में जीने वाले के लिए हृदय विभाव-दशा है और मेरे लिए स्वभाव-दशा। हार्दिक व्यक्ति अपनी ओर से हर समय, हर क्षण प्रेम बरसाता है, जबकि

प्रज्ञा-मनीषियों की दृष्टि में यह प्रेम राग है, विभाव-दशा है। तुम्हारे जीवन में सरसता होनी ही चाहिए। जब तुम नितांत एकांत के क्षणों में हो और हृदय में स्नेह की रसधार न हो, तो जीवन की सार्थकता क्या? जीवन में रस न हो, प्रेम का झरना न हो, हृदय का उत्सव न हो, आनंद का उत्सव न हो, तो जीवन में क्या पाया?

हृदय के पास अपनी आँख है। ऐसी आँख जो सारे संसार को देख सके। संसार से दूर तो सभी सकते हैं, पर जुड़ हर कोई नहीं सकता। तुम एक संकुचित दायरे से तो स्वयं को जोड़ सकते हो, लेकिन कहा जाए कि सम्पूर्ण अस्तित्व को अपने में समाविष्ट कर लो तो यह कठिन कार्य होगा। प्रार्थनाएं जरूर

जाए जहाँ की इच्छा करने लगता है, तो मन का विकार हो जाता है।

मन को साधने को बात नहीं करूंगा। मन को तो विसर्जित करना है। हमें हृदय से जीना है। हृदय से जीकर ही जीवन का आनंद लिया जा सकता है। हृदय ही आनंद का द्वार है। हृदय में एकाग्र होते ही आनंद का विस्फोट होता है। हृदय में रहकर हर क्षण आनंद में रह सकते हो। हृदय से हम हर पल, हर क्षण और कहीं भी उसका अनुभव कर सकते हैं, यहाँ तक कि प्रकृति के हर तत्व में भी उसका वरदान नज़र आएगा, हर ओर उसके प्रेम में डूबे हुए संगीत के स्वर ही सुनाई देंगे। संसार से प्रेम करके देखो, तब यह प्रश्न ही न उठेगा कि परमात्मा है या नहीं, क्योंकि उसी की सु-

दर रचना ही सब ओर है। कभी यह तर्क नहीं जगेगा कि आने वाले कल में क्या होगा, क्योंकि वह सब व्यवस्था कर रहा है। हृदयवान होकर ही कुछ कर सकते हो। प्रेम और करुणा जो जी सकते हो। हृदय ही प्रेम और करुणा का सागर है। हृदय ही प्रेम और करुणा का आधार है। हृदय के होने पर ही प्रेम, करुणा और शान्ति है। बाहर की आँखें कुछ भी देखती रहें, पर हृदय की आँख ही आँख है। महावीर ने संदेश दिया था कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक

चरित्र ही मोक्ष-मार्ग है। सम्यक दर्शन का अर्थ है हृदय की आँखों से देखना। हृदय की आँख के बिना पूरा-पूरा और सही नहीं देख पाओगे। अगर मुझे हृदय की आँख से देखोगे तो ही जान पाओगे कि मैं क्या हूँ। अगर बुद्धि और तर्क की आँखों से मुझे देखोगे तो मेरे प्रति स्वयं तुम्हारे सौ संदेह खड़े हो जाएंगे। प्रभु करे, आप हर ओर से करुणा के फूल बाँटें। प्रभु करे, आप अपना प्रेम एक-दूसरे को प्रदान करें। जब भी विपरीत वातावरण बने, अपने हृदय में चले जाओ। कुछ देर वहीं रुके रहो, ताकि वह विपरीत वातावरण तुम्हारे हृदय में असर न करे। वह मन और बुद्धि के दरवाज़े तक पहुंचें और वहीं से वापस लौट जाए। हमें तो जीवन का आनंद चाहिए और वह आनंद हृदय में ही घटित होगा।



सिकंदराबाद। सेवाकेन्द्र की सिल्वर ज्युबली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी साध है ब.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, वी. ईश्वरैय्या, पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय तथा आंध्र प्रदेश से शरीक हुए मंत्रीगण।

आपसे कुछ गलत को काट जाएगा “ध्यान”

विगत वर्ष दुनिया के बायोलॉजिस्टों की, जीवनशास्त्रियों की एक कॉन्फ्रेंस में ब्रिटिश बायोलॉजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष बादकुन ने एक वक्तव्य दिया था। उन्होंने उस वक्तव्य में बड़ी महत्वपूर्ण बात कही, जो एक वैज्ञानिक के मुंह से बड़ी अद्भुत बात है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन का विकास किन्हीं नई चीजों का संवर्धन नहीं है, नथिंग न्यू एडेड, वरन कुछ पुरानी बाधाओं का गिर जाना है, ऑल्ड हिंडरेंसेस गॉन। मनुष्य के विकास में कुछ जुड़ा नहीं है, मनुष्य के भीतर जो छिपा है... कोई भी चीज प्रकट होती है, तो सिर्फ बीच की बाधाएं भर अलग होती हैं। पशुओं में और मनुष्य में विचार करें, तो मनुष्य के भीतर पशुओं से कुछ ज्यादा नहीं है, बल्कि कुछ कम है। पशु के ऊपर जो बाधाएं हैं, वे मनुष्य से गिर गई हैं; और पशु के भीतर जो छिपा है, वह मनुष्य में प्रकट हो गया है।

एक बीज में और फूल में, फूल में बीज से ज्यादा नहीं है, कुछ कम है। यह बहुत उल्टा मालूम होता है, लेकिन यही सच है। बीज में जो बाधाएं थीं, वे गिर गई हैं और फूल प्रकट हो गया है। पौधों में पशुओं से कुछ ज्यादा है, बाधाएं ज्यादा हैं, हिंडरेंसेस ज्यादा हैं। वे गिर जाएं तो पौधे पशु हो जाएंगे। पशुओं की बाधाएं गिर जाएं तो पशु मनुष्य हो जाएंगे। मनुष्य की बाधाएं गिर जाएं, फिर जो शेष रहता है, उसका नाम देवात्मा है। अगर समस्त बाधाएं गिर जाएं और जो छिपा है वह पूरी तरह से प्रकट हो जाए, तो उस शक्ति को हम जो भी नाम देना चाहें आत्मा, देवात्मा या कोई भी नाम देना चाहें तो भी चल सकता है। मनुष्य में भी

अभी बाधाएं मौजूद हैं, इसलिए मनुष्य के विकास को अभी संभावना है। बादकुन को अभ्यास से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन उसका वक्तव्य ठीक वैसा ही है, जैसा पच्चीस सौ वर्ष पहले बुद्ध ने अपने ज्ञान को घटना के समय दिया था। जिस दिन बुद्ध को पहली बार ज्ञान हुआ



तो लोगों ने उनसे पूछा, आपको क्या मिल गया है? तो बुद्ध ने कहा, मुझे मिला कुछ भी नहीं, जो मेरे ही भीतर था वह प्रकट हो गया है। मुझे मिला कुछ भी नहीं, जो मेरे ही पास था, मुझे ज्ञात हो गया है। मुझे मिला तो कुछ भी नहीं, जो मैं था ही और जिसके प्रति मैं सोया था, उसके प्रति मैं जाग गया हूँ। बल्कि बुद्ध ने यह भी कहा कि तुम्हें मैं यह भी कह दूँ कि कुछ मेरे पास था जरूर वो खो गया है। अज्ञान था, वह खो गया है; नासमझी थी, वह खो गई है। और जो मुझे मिला है, अब मैं कह सकता हूँ, वह मेरे पास था ही, लेकिन सिर्फ मैं अपरिचित था।

बादकुन और बुद्ध के वक्तव्यों में फर्क नहीं है, लेकिन बादकुन का वक्तव्य मनुष्य से पिछड़े हुए प्राणियों के संबंध में दिया गया है और बुद्ध का वक्तव्य मनुष्य से आगे गए व्यक्तियों के संबंध में दिया गया है।

ध्यान की प्रक्रिया आपको किसी नये जगत में नहीं ले जाती, सिर्फ उसी जगत

से परिचित करा देती है जहां आप जन्मों-जन्मों से हैं ही। ध्यान की प्रक्रिया आपमें कुछ जोड़ती नहीं है, कुछ गलत काट देती है, गिरा देती है, समाप्त कर देती है।

एक मूर्तिकार को कोई पूछ रहा था कि तुमने यह मूर्ति बहुत सुंदर बनाई! तो उस मूर्तिकार ने कहा, मैंने बनाई नहीं है, मैं तो उस रास्ते से गुजरता था और इस पत्थर में छिपी मूर्ति ने मुझे पुकार लिया। मैंने जो व्यर्थ पत्थर इसमें जुड़े थे, उन्हें भर अलग कर दिया है और मूर्ति प्रकट हो गई। मैंने कुछ जोड़ा नहीं, कुछ घटाया है। बेकार पत्थर जो मूर्ति के चारों तरफ जुड़े थे, उन्हें मैंने छांट दिया है और मूर्ति जो छिपी थी वह प्रकट हो गई।

मनुष्य के भीतर जो छिपा है, कुछ गलत जुड़ा है, उसे काट देने से प्रकट हो जाता है। देवात्मा मनुष्य से भिन्न कुछ नहीं है, मनुष्य के भीतर छिपी ऊर्जा, एनर्जी का नाम है। लेकिन जैसे हम हैं, उसमें बहुत मिट्टी मिली है सोने में। थोड़ी मिट्टी छंट सके तो सोना प्रकट हो सकता है।

तो ध्यान के संबंध में पहली बात जो मैं आपको कह दूँ, वह यह कि आप अपने ध्यान के विकास में अंतिम क्षणों में भी जो होंगे, वह आप अभी, इस क्षण में भी हैं। ध्यान आप में कुछ जोड़ नहीं जाएगा, सिर्फ घटा जाएगा। आपसे कुछ गलत को काट जाएगा, कुछ व्यर्थ को अलग कर जाएगा। और जो सार्थक है वह पूरी तरह से प्रकट होने की सुविधा पा सकेगा। नथिंग समथिंग न्यू एडेड- नहीं कुछ नया जुड़गा, सिर्फ पुरानी बाधाएं गिर जाएगी।

प्रेम और दृढ़ता... भेज। का शेष... वाले एक आदर्श नेता हैं।
व्यर्थ विचार से काफी एनर्जी हो जाती व्यर्थ - रंजना कुमार
पूर्व सतर्कता आयुक्त श्रीमती रंजना कुमार ने कहा कि चंद्रबाबू नायडू जी के नाम के साथ प्रगति और विकास का नाम जुड़ा हुआ है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज को जो स्थान उपलब्ध कराके दिया वह उनकी दूरदर्शिता का परिचायक है। चार साल पहले हम ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आये तब से हम तनावमुक्त, खुशनुमा जीवन का अनुभव कर रहे हैं। हम सोचते थे कि रिटायरमेंट के बाद ऐसे मार्ग से जुड़ना चाहिए। परंतु हमने यह जाना कि अपने-अपने व्यवसाय में रहते हुए भी हम इस संस्था से जुड़े रहेंगे तो हमें ज्यादा लाभ होगा। मैंने यहाँ आकर सीखा कि हम अपने विचारों को चेक करते रहें। जैसे कम्प्यूटर में राँग फाइल डिलीट करते हैं उसी प्रकार व्यर्थ विचार से काफी एनर्जी व्यर्थ हो जाती है जिसे हमें भी डिलीट कर देना है। 45 वर्षों से हम

सरकारी सर्विस में थे उस समय अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान लेना, निर्णय लेना काफी कठिन काम था परंतु जब से ब्रह्माकुमारीज से जुड़े हैं तब से हर समस्या का सहज ही हल प्राप्त होता है। तेलंगाना, हैदराबाद स्थित ब्रह्माकुमारीज के शान्तिसरोवर रिट्रीट सेंटर का दशाब्दि समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडू जी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्रह्माकुमारीज की आंभा, तेलंगाना और महाराष्ट्र की जॉन प्रभारी ब.कु. संतोष, राज्यमंत्री वाय.एस. चौधरी, एन.सी.बी.सी. के अध्यक्ष जस्टिस ईश्वरैय्या, विनूकोण्डा के विधायक जी.अंजनेयुलु, गीतम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष एम. मूर्ति, पूर्व सी.बी.आई. निर्देशक डॉ. कार्तिकेयन, ब्रह्माकुमारीज शान्तिवन के प्रभारी ब.कु. भूपाल और शान्तिसरोवर की निदेशिका ब.कु. कुलदीप उपस्थित थे।



शांतिवन। “रेडियो मधुवन 90.4 एफ.एम. की चौथी वर्षगांठ पर दीप प्रज्वलित करते हुए प्लानिंग कमिशन के ज्वाइंट सेक्रेटरी देबब्रत दास, प्रसिद्ध गायिका हमसिका अय्यर, बी.डी.ओ. मनोहर विष्णोई, म्युनिसिपल चेयरमैन सुरेश थिंगर, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, जस्टिस वी. ईश्वरैय्या, ब.कु. रमेश शाह, ब.कु. आशा, ब.कु. करुणा व ब.कु. यशवंत।



गुलवर्गा-कर्नाटक। योग भट्टी के उद्घाटन अवसर मंच पर उपस्थित हैं ब.कु. भूपाल, माउण्ट आबू, ब.कु. विजया, ब.कु. प्रेम, ब.कु. दीपक व अन्य।



हाथरस। उपजिलाधिकारी ब्रजकिशोर दूबे को आध्यात्मिक पुस्तक भेंट करते हुए ब.कु. शान्ता।



ग्वालियर-म.प्र.। केन्द्रीय विद्यालय में “समय प्रबंधन एवं शांति शिक्षा” विषय पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर से आये हिन्दी शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए ब.कु. चेतना।



नागपुर-कामठी। पत्रकारों के लिए आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पत्रकार संघ के अध्यक्ष उज्ज्वल रायबोले, वरिष्ठ पत्रकार सुदामजी राखडे, ब.कु. शीलू, ब.कु. प्रेमलता तथा पत्रकार गण।



कोल्हापुर-रुकाडी(महा.)। ‘राजयोग सभागृह’ के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में विधायक डॉ. सुजीत मिंचेकर, जेड.पी. के सदस्य धैर्यशील माणे, सरपंच, डिप्युटी सरपंच, पंचायत समिति के सभापति, ब.कु. सुनीता, ब.कु. आशा, ब.कु. विदुल तथा अन्य।



लॉस एंजिल्स। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में पाकिस्तान के कार्डिनल जेनरल माननीय हमीद असगर खान, ब.कु. गीता, ब.कु. हेमा तथा अन्य।



चांसिसर्गाव-महा। विधायक उमेशा पाटिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना।



भरुच। एन.टी.पी.सी. के कैम्पस में स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस अर्थात् युवा दिवस के अवसर पर आयोजित हाई स्कूल के विद्यार्थियों की भाषण स्पर्धा में विजेता विद्यार्थियों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. रामनाथ, के. श्रीधर, जेनरल मैनेजर, एन.टी.पी.सी. तथा अन्य।



राजकोट-रविरत्नापार्क। जनजागृति के लिए निकाली गई प्रभात फेरी के दौरान उपस्थित हैं कॉर्पोरेट जगदीश भाई पटेल, वार्ड नं. 12 के चीफ विक्रम भाई पुजारा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. डिम्पल तथा अन्य।



भोपाल। पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 46वें स्मृतिदिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में ईश्वरीय संदेश के साथ लक्ष्मी को स्पष्ट किया तथा उस सप्ताह के कार्यक्रम की जानकारी दी।



इस्लामपुर। पुलिस स्टेशन में आध्यात्मिक कार्यक्रम के परिचायक समूह चित्र में पुलिस निरीक्षक संजय पाटिल, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. प्रकाश तथा अन्य।



सूरत-वालाजी रोड। पांच दिवसीय 'गीता ज्ञान रहस्य' शिविर का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए धारासंध्य सी. आर. पाटील, पूर्व मंत्री नरोत्तम भाई पटेल, हरीश भाई, बीना बहन, इंटरनेशनल स्कूल के डस्टी, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. फाल्गुनी तथा ब्र.कु. रंजन।

बुद्धि की धार तेज़ समय में से समय निकाल कर करो

एक लड़का था और उसे कुछ काम चाहिए था। वो काम की तलाश में भटक रहा था। जगह-जगह जाकर पूछता था कि कहीं मुझे काम मिले। किसी व्यक्ति ने उसको बताया फलाने सेठ के पास चले जाओ, वो तुम्हें काम देगा। वो लड़का उसके पास चला गया। वहाँ जाने के बाद उसने सेठजी से बिनती की कि क्या आप मुझे काम दे सकते हैं? सेठजी ने पूछा तुम क्या काम कर सकते हो? कहा कुछ भी कर सकता हूँ। सेठजी के पास बड़ा भारी लकड़ियों का स्टॉक था। उस लड़के को कहने लगे, देखो ये लकड़े काटने हैं। लड़के ने कहा काट दूंगा। तो कहा ठीक है, सुबह इतने बजे आना और इतने बजे जाना, सारा दिन लकड़ी काटना होगा। उसने कहा, हाँ, काटूंगा और उसने काटना आरंभ किया। दिन के अंत में सेठजी ने देखा कि पच्चीस लकड़े काट गये थे। वे बड़े खुश हो गये और कहा कि तेरे पास तो अच्छी शक्ति है काटने की। तो कहा ठीक है, तुम आज से काम पर आ जाओ रोज आकर के तुम्हें लकड़े काटने हैं। वो रोज जाता रहा। अपने टाइम पर जाता था और टाइम पर वहाँ से निकलता था। सारा दिन आराम भी नहीं करता था। सारा दिन लकड़ी काटना था। हफ्ता बीत गया सेठजी चक्कर लगाने निकले और उस लड़के के पास पहुंच गए। देखा कि सारे दिन में उसने सिर्फ पंद्रह लकड़े काटे हैं। तो कहा कि पहले दिन तो पच्चीस काट दिए, आज पंद्रह लकड़े कैसे काटे! तो लड़का कहने लगा सेठजी, यही मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ लेकिन दिन मैंने तो पच्चीस काट दिये थे। लेकिन पता नहीं क्यों? मैं लकड़ी काटता हूँ और आराम भी नहीं करता हूँ। उसके साथियों

ने भी कहा कि ये आराम नहीं करता है। सारा दिन लगा रहता है। तो फिर कहा पंद्रह ही क्यों काटे? कहा, यही तो पता नहीं चल रहा है। सेठजी ने कहा तेरी क्षमता कम क्यों हो रही है? तुम अपनी क्षमता को बढ़ाओ। तो उसने कहा ठीक है कल से मैं कोशिश करूंगा कि और अधिक लकड़ी काट सकूँ। हफ्ता बीता। हफ्ते के बाद पुनः सेठजी चक्कर लगाने गए, तो देखा कि सारे दिन में उसने सिर्फ दस लकड़े काटे हैं। सेठजी ने फिर पूछा कि पहले दिन तो तुमने पच्चीस काट दिये थे। दूसरे सप्ताह तक तुमने सिर्फ दस ही काटे हैं। इतनी कम तेरी क्षमता क्यों हो गयी है? लड़के ने कहा कि यही बात तो मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ। सारा दिन मेहनत करता हूँ। खूब मेहनत करता हूँ। ज्यादा लकड़े अब काटते ही नहीं हैं।

सेठजी ने सवाल पूछा कि तुमने कुल्हाड़ी की धार एक बार भी तेज किया है? तो लड़का कहने लगा सेठजी, टाइम कब मिलता है? सारा दिन तो लकड़ी काटता हूँ। टाइम कब मिलता है कि मैं कुल्हाड़ी की धार को तेज करूँ? अब उस लड़के को क्या कहेंगे? समझदार कहेंगे! मेहनत खूब कर रहा है और क्षमता क्षीण हो रही है, उसके पास धार तेज करने का टाइम नहीं है। अरे उसी में थोड़ा टाइम निकालकर धार तेज कर लो, कम मेहनत में तुम अधिक क्षमता वाला कार्य कर सकते हो। लेकिन ये बात उसकी बुद्धि में बैठती ही नहीं थी। ठीक

इसी प्रकार आज की दुनिया के मनुष्य हैं जो कि सारा दिन कार्य करते हैं और कार्य में ही व्यस्त रहते हैं। लेकिन जब उनको कहे कि तुम अपनी बुद्धि की धार को तेज करने के लिए थोड़ा ज्ञान-अमृत का पान करो, तो क्या कहते हैं कि हमारे पास टाइम नहीं है। टाइम मिलेगा तो सुनने के लिए ज़रूर आयेगे। अरे उसी में से ही टाइम निकालो और बुद्धि की धार को तेज कर दो। जब बुद्धि की धार ज्ञान के आधार से तेज हो जाती है तो विवेक शक्ति बढ़ जाती है तथा आंतरिक क्षमता भी बढ़ जाती है। जिससे हम कम समय में अधिक कार्य

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक बहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा



कुशल बन सकते हैं। लेकिन वही लड़के वाली मन:स्थिति कि टाइम मिलेगा तो करेंगे। टाइम तो सारी ज़िंदगी मिलने वाला नहीं है। मिलेगा टाइम? क्या कहेंगे टाइम मिलेगा? भगवान अगर चौबीस घण्टे के पच्चीस घण्टे भी बनाकर दे, कि चलो एक घण्टा एक्सट्रा बना दिया तुम्हारे लिए, तो भी मनुष्य कहेगा कि टाइम नहीं है। वो टाइम कहां चला जायेगा पता ही नहीं चलेगा। इसलिए कहा एक बार जिसने ज्ञान को धारणा किया, वो सदा अपनी बुद्धि को ऐसा तेज कर देता है कि सदा शाश्वत रूप में अपने अंदर रहता है।

परम आनंद की... - पेज 3 का शेष अनुभव नहीं करेंगे तो और कौन करेगा... जिन्हें साथ देने वाला स्वयं प्रभु हो, यदि वे ही सदा उसके साथ नहीं रहेंगे तो और कौन रहेगा... इसलिए हे योगी, अब तू उसी के साथ जीवन बिता...

लहरें अवरिल गति से अपना काम कर रही थीं... कभी ऊंची उठती थीं, कभी लोप हो जाती थीं। मानो संदेश दे रही हों... हे योगी, तुम भी इसी तरह लहराना सीखो... तुम गमगीन क्यों हो... सागर के बच्चे भी यदि नहीं लहराएंगे... तो और कौन लहराएगा... देख स्वयं भगवान तुम्हारे आगे चल रहा है... उसके साथ होते भी तुम चिन्तित क्यों हो जाते हो... और योगेश का मन अत्यंत प्रफुल्लित हो गया। उसे समय का भी बोध न रहा।

उसे प्रभु की लीलाएं याद आने लगीं... अन्तर्मन से आवाज उठी, तू उसके प्यार में मग्न हो जा... केवल भगवान से ही प्यार कर... मनुष्यों के प्यार में धोखा है... योगियों को मनुष्यों की प्रीति में नहीं बहना चाहिए। तुम्हें तो भगवान का प्यार मिला है... अब तो अपने प्रेम के धागों से प्रेम के सागर को बांध ले। तू केवल उसे प्यार में ही बांध सकता है। याद कर, गोप-गोपियों ने उसे प्रेम की रस्सी में बांध लिया था... अर्जुन के प्यार में भी वह बंध गया था, परंतु कंस व दुर्योधन उसे कदापि न बांध सके। हे योगी, मग्न हो जाओ प्रभु प्यार में... तुम्हारे प्यार के अश्रु मीठी तुम्हारी विजय माला बन जायेंगे।

तभी उसका ध्यान सागर के मध्य की ओर गया... लहराते सागर के मध्य सीना ताने खड़ी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ उसे संदेश दे रही थीं...

योगी, देख हम सागर के तूफानी लहरों के बीच भी अटल हैं... इसके भयंकर तूफान हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते... फिर तुम क्यों माया की छोटी-छोटी लहरों से ही विचलित हो जाते हो... हे योगी, सागर का धर्म लहराना है और हमारा धर्म अटल रहना है... तुम भी अटल रहना अपना स्वधर्म बना लो... फिर तुम तो प्रकृति के और इस सागर के भी मालिक हो... प्रकृति तो तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत है... तुम मालिक बनो, अधीन मत बनो।

और उसको लगा मानो सागर बाहें पसार उसका आह्वान कर रहा हो... हे मेरे मालिक, मैं कब से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ... मैं तुम्हारी जन्म-जन्म सेवा करूँगा... हे ईश, मेरी सेवाएं स्वीकार करो... मेरे गर्भ में अनंत धन राशि है, हों-मोती हैं... वे सब तुम्हारे स्वर्ग को सुशोभित करेंगे...

अपने सेवक की विशालता को निहारकर और अपनी साधारणता को जानकर उसका मन नीरस हो उठा... और तब ही उसने देखा अचानक सागर से बादल उठे और अश्रु बहाने लगे... शायद वे भी योगी की नीरसता पर उदास हो गये थे... तब उसे झटका सा लगा... उसके विवेक की गांठ खुली और उसे अपने प्राण प्रिय परमात्मा के उपकार याद आने

लगे... याद कर उसने तुम पर कितना उपकार किया... यदि वह तुम्हारी इस जीवन यात्रा में तुम्हारा मित्र न बनता तो तुम कहां होते... जीवन का बोझ ढोते-ढोते थक गए होते... तुम्हारे पैरों में पड़े छाले तुम्हारे दु:खों की गाथाएँ दोहराते... विषयों में डूब-डूब कर तुम सुख चैन की तलाश में भटकते होते... शान्ति के भिखारी बनकर मन्दिरों व साधुओं के द्वार खटखटाते... बेसहारे होकर प्रभु को पुकारा करते और आज... आज तुम प्रभु की शीतल छत्रछाया में हो... उसकी पालना में पल रहे हो... उसकी ही नज़रों में जी रहे हो... और तब उसे लगा कि उसके ऊपर स्वयं सर्वशक्तिवान छत्र बनकर उपस्थित है। वह आनंद विभोर हो उठा... मन की नीरसता लोप हो गई... उसकी मन-वीणा में आवाज गुँज उठी...

जिसने तुम्हें नवजीवन का दान दिया... जिसने तुम्हें जीवन भर साथ देने का वायदा किया... जिसने रात-दिन तुम्हारा श्रृंगार किया... जिसने तुम्हारे सभी बोझ हरकर तुम्हें जीवन का सुख प्रदान किया... जिसने तुम्हारे जीवन में चैन की बंसी बजाई... जो जीवन राहों पर तुम्हारा सच्चा साथी बना... उसे तुम क्यों भूल जाते हो... उस सच्चे हितैषी, सच्चे प्रियतम को भूल तुम किसे याद करते हो...

इस प्रकार आनंद की गहन अनुभूतियों में मग्न हो गया योगेश... जब उसे जाने का बोध हुआ तो देखा दस बजे थे और वह तीव्रता से घर की ओर लौटा।

कथा सरिता

शील का घनीभूत रूप वीरता

महर्षि बोधायन के पास कई विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। उनका आश्रम विद्यार्थियों से भरा रहता और वे उनके सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देते थे। एक दिन वे शिष्यों के आग्रह पर आश्रम के निकट स्थित एक नदी तट पर गए। शिष्य गुरु के साथ नदी में बड़ी दर तक तैरते रहे। जब वे थक गए तो सब तट पर आए और भोजन के बाद वहीं विश्राम करने लेट गए। शीघ्र ही सबको नींद आ गई। इस प्रकार रात बीत गई। दूसरे दिन सुबह सबको नींद खुली। गुरु बोधायन ने जागकर सबसे पहले एक वृक्ष के नीचे सो रहे शिष्य गार्ग्य को जगाने का विचार किया और उसको ओर बढ़े। वहाँ जाकर देखा, शिष्य जाग रहा था और उसके पैर पर एक सर्प कुंडली मारकर सो रहा था।

यह दृश्य देखकर बोधायन को चिंता हुई। शिष्य ने गुरु से कहा- गुरुजी आप चिंता न करें। यह जामने पर स्वतः चला जाएगा। यह सुनकर बोधायन इंतजार करने लगे। कुछ देर बाद सांप जागा और झाड़ियों में चला गया। पांव में भयानक सर्प के लिपटे रहने पर भी शांत रहने वाले शिष्य को पाकर बोधायन और अन्य सहपाठी बहुत प्रसन्न हुए। गुरु ने उन्हें गले से लगा लिया और आशीर्वाद देते हुए कहा-बेटा तुम्हारा शील अक्षय बना रहे। गार्ग्य का एक मित्र मैत्रायण पास ही खड़ा था, उसे गुरु का आशीर्वाद समझ न आया। उसने पूछा- भगवन्, गार्ग्य के व्यवहार में साहस और दृढ़ता का परिचय मिलता है, फिर आपने शील अक्षुण्ण रहने का आशीर्वाद दिया। ऐसा क्यों? बोधायन ने कहा- वत्स! जिस प्रकार जल का ठोस रूप हिम है, उसी प्रकार शील का घनीभूत रूप साहस, दृढ़ता और धैर्य है। यदि व्यक्ति हर परिस्थिति में अपने शील को रक्षा के प्रति सजग रहे तो वह असाधारण वीरता को विकसित कर सकता है। सामान्यतया शील और धैर्य को वीरता का गुण नहीं माना जाता लेकिन यथार्थ में पराक्रम इन्हीं में बसता है।

प्रिय का कष्ट

बम्बरे पोतन्ना ने श्रीमद्भागवत का तेलुगु में रूपांतरण किया था। एक दिन वे भगवत अष्टम स्कंध में गजेंद्र-मोक्ष प्रसंग में लिख रहे थे- ग्राह ने गजेंद्र का पैर पकड़ा और धीरे-धीरे उसे जलाशय में खींचने लगा। सब गजेंद्र प्राण बचाने के लिए भगवान् विष्णु से प्रार्थना करने लगे तो भगवान् बुरत भूमि उन्हें सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान ही नहीं रहा।

पोतन्ना का साला श्रीनाथ वहीं बैठा था। उसने वह वाक्य पढ़ा तो हसने लगा। संत ने पूछा-तुम क्या हँस रहे हो? श्रीनाथ बोला- आपने जो लिखा है वह काव्य में भले ही ठीक लगे, तर्क की दृष्टि से हास्यास्पद लगता है। पोतन्ना उस समय चुप रहे और बात आई-गई हो गई। दूसरे दिन पोतन्ना ने श्रीनाथ के बालक को खेलने के लिए दूर भेज दिया। वे आंगन में आए और एक बड़ा सा पत्थर कुएं में फेंक दिया। ज़ोरदार आवाज़ आई तो घर से महिलाओं ने चिंतित होकर पूछा-क्या हुआ? चौखते हुए पोतन्ना ने कहा- श्रीनाथ दौड़ो, तुम्हारा बच्चा कुएं में गिर गया है। श्रीनाथ हड़बड़ाकर दौड़ता हुआ आया और कुएं में कूदने को तैयार हो गया। पोतन्ना ने उसे पकड़ लिया और कहा-मूर्ख, तुम कुएं में बिना सोचे-समझे कूद रहे हो। तुम तो तैरना भी नहीं जानते, फिर बच्चे को और स्वयं को बाहर कैसे निकालोगे? तुमने कोई रस्सी भी साथ नहीं रखी। श्रीनाथ रुंआसा होकर सोचने लगा। पोतन्ना ने कहा-घबराओ नहीं, तुम्हारा बच्चा मैदान में सकुशल खेल रहा है, लेकिन तुम्हारे व्यवहार में ही तुम्हारे उस दिन के प्रश्न का उत्तर छिपा हुआ है।

जब कोई किसी से प्रेम करता है तो प्रिय व्यक्ति के दुःख में वह अपनी सुध-बुध छोड़ बैठाता है। ऐसे समय वह भला-बुरा, व्यवस्था-अव्यवस्था आदि का ध्यान नहीं रखता। यही कारण है कि प्रिय भक्त की पुकार सुनकर भगवान् जब दौड़ें तो अपने आयुध को साथ लेना भूल गए।

कहू की तीर्थ यात्रा

एक बार तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोगों के संघ ने संत तुकाराम जी के पास जाकर उनसे अपने साथ यात्रा पर चलने का आग्रह किया। संत तुकाराम जी ने उनके साथ चलने की असमर्थता जताई, किन्तु उन्होंने तीर्थ यात्रियों को एक कड़वा कहू देते हुए कहा: 'मैं तो आप लोगों के साथ नहीं आ सकता लेकिन आप इस कहू को साथ ले जाइए और जहाँ-जहाँ भी स्नान करें, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लीयें।'

लोगों ने उनके गुद्दार्थ पर गौर किये बिना ही वह कहू ले लिया और जहाँ गए, स्नान किया, वहाँ-वहाँ उसे भी स्नान करवाया। मंदिर में जाकर दर्शन किया तो उसे भी दर्शन करवाया। इस तरह यात्रा पूरी करके सब वापस आए तो उन सभी यात्रियों को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया गया और यात्रियों के लिए विशेष रूप से कड़ू की सब्जी बनवायी गयी। सभी यात्रियों ने खाना शुरु किया और सबने कहा कि यह सब्जी तो कड़वी है। 'तुकाराम ने आश्चर्य से कहा, ये तो उसी कड़ू से बनी सब्जी है जो तीर्थ और स्नान कर आया है। बेशक ये तीर्थटन के पूर्व कड़वा था, मगर तीर्थ दर्शन तथा स्नान के बाद भी इसमें कड़वाहट है ही।'

यह सुनकर सभी यात्रियों को बोध हो गया कि 'हमने सिर्फ तन का तीर्थटन किया है, मन का नहीं।' अपने मन को एवं स्वभाव को यदि सुधारा नहीं तो तीर्थ यात्रा का अधिक मूल्य नहीं है। हम भी एक कड़वे कहू जैसे कड़वे रहकर ही वापस आये हैं।

सज्जनता का प्रभाव सूक्ष्म

एक राजा को कोई असाध्य बीमारी हो गई। वैद्यों को बताया तो उन्होंने रोग को कोढ़ बताया। कई निदान बताए गए, लेकिन किसी से कोई असर होते न दिखा। राजवैद्य ने कहा-महाराज, इस रोग का एक ही इलाज है। यदि आप राजहंस के मांस का भक्षण करें तो इस बीमारी से मुक्ति पा सकते हैं। राजहंस को पाना आसान न था। किसी जानकार ने बताया कि वे तो मानसरोवर में पाए जाते हैं, वहाँ कोई विरला साधु-संत ही जा पाता है। कुछ साधुओं से राजा को धर्म का स्वरूप बताकर कुछ राजहंस ले आने के लिए कहा गया, लेकिन कोई भी इसके लिए तैयार न हुआ। अंत में एक बहेलिया साधु का भेष धारण कर मानसरोवर जाकर राजहंस लाने के लिए राजी हुआ।

मानसरोवर में राजहंस साधु-संतों से घुले-मिले थे। वे न किसी से भयभीत होते थे, न अजनबियों को देख दूर भागते थे। बहेलिये ने बिना किसी प्रयत्न के बहुत से राजहंसों को पकड़ लिया और उन्हें राजा के सामने प्रस्तुत कर दिया। राजहंसों का सहज स्वभाव देख राजा के मन पर भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा जो जीव संतों के प्रभाव से इस तरह अहिंसा में प्रतिष्ठित हो गए हैं कि उन्हें अपने घातक शत्रु से भी भय नहीं लगता, खुद की मृत्यु के भय से उन्हें मारना कितना बेतुका है। उसने राजहंसों को मुक्त कर दिया। यह देखकर बहेलिये के मन पर भी भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा राजहंसों के स्वभाव से प्रभावित हो राजा अपने रोग के निदान हेतु हिंसा से विरत हो गया, वे राजहंस उसके झूठे संतवेश के प्रभाव से ही निर्भय हो गए, वह संत भाव यदि वास्तव में उपलब्ध हो जाए तो कितना शांतिकारक होगा। बहेलिया सब कुछ त्यागकर जंगल चला गया और साधु बन गया। संत स्वभाव की महिमा ऐसी ही है। ज्ञानी-मानी, पंडित-मूढ़ ही नहीं पशु-पक्षी तक उससे अप्रभावित नहीं रह पाते। वे संपर्क में आने वाले हर जीव में आमूल परिवर्तन कर देते हैं।



कटघोरा। 'आध्यात्मिक समागम' का उद्घाटन करते हुए नगर पालिका परिषद अध्यक्ष ललिता डिकसेना, उपाध्यक्ष पवन अग्रवाल, नगर निरीक्षक गोपाल वैश्य, ब्र.कु. रुक्मिणी, ब्र.कु. शशि तथा ब्र.कु. राजश्री।



सेन्दुरी-महा। जल संपदा मंत्री गिरीश भाऊ महाजन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वर्षा।



वार्शां। वाहतूक अधिकारी विजय पोडे को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहन साथ ही वजनथभाई।



मुवई-डोम्बीवली। स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए समाज सेविका सरोज नेरकर, गांवदेवी स्कूल ट्यूटी केशव भाई, ब्र.कु. शक्, विशाल मनीयार, डॉ. रूपम जोशी तथा अन्य।



राजकोट-गुज. ब्रह्मा बाबा के स्मृति दिवस पर साकार बाबा के साथ का अनुभव सुनाते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. रेखा तथा ब्र.कु. आरती।



वैराग-महा. बस डेपो में स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. शिवकन्या, पुलिस निरीक्षक ऐकेरे, ब्र.कु. मोहन, दादा मोहिते तथा अन्य।



दीव। बच्चों के लिए आयोजित 'ममोरी मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. करण व ब्र.कु. गीता, अंबाला, एन.सी.सी. ऑफिसर वंदना बहन, एन.सी.सी. की कन्याएं, बच्चे, शिक्षक प्रतिभा बहन व अन्य।



आपका सेवा-निवृत्ति के समय जब लोगों द्वारा आभार पत्रों का आभार है, तब सब कुछ

दूटता हुआ नजर आता है। अब क्या करूंगा, बैठ तो सकूंगा नहीं। रिटायर शब्द की संज्ञा जुड़ने के बाद लोग आपको और बेगाना समझने लग जाते हैं। सिर्फ टायर बनकर आप लोगों के बोझ ढोते नजर आते और कहते फिरते, नौकरी ही अच्छी थी, कम से कम समय तो कट जाता था। पर सच तो यही है वक्त किसी के लिए कभी ठहरता नहीं, और यदि नई पीढ़ी के साथ आप नहीं चले तो आपको अकेलापन घेर लेगा, हम उम्र के साथ नहीं जुड़े तो दुःख-सुख किससे बाँटेंगे..... अब थोड़ा सा समय और बचा है तो क्यों न इसका जवाब तलाशा

आने वाले सुबह की तैयारी

जाये।
स्वयं की स्वयं से मुलाकात:- आप जब भी दफ्तर में जाते तो सबसे पहले अपने बाँस के केबिन में जाते तथा उसे गुडमॉर्निंग करते और वैसे ही बारी-बारी से आप सभी से मिलते जाते और सबसे गुडमॉर्निंग करते थे। यदि आपको जैसा आप चाहते हैं वैसा गुडमॉर्निंग का प्रत्युत्तर नहीं मिलता तो आप सोचने पर मजबूर भी हो जाते कि शायद कुछ आज गड़बड़ है क्या? और आप बीरवीर भी महसूस करने लग जाते हैं। ऐसे ही आपके पास एक शरीर रूपी दफ्तर है, जिसमें मस्तिष्क रूपी प्रमुख केबिन में मुख्य बाँस बैठता है, जिसके साथ उसी केबिन में प्रमुखतः तीन कर्मचारी उसके सहयोगी होते हैं जो समय प्रति समय उसे सहयोग करते हैं। यदि आपके दफ्तर में बाँस कोई निर्णय ले और कर्मचारी उस पर अपनी

(आपने हमेशा यही सोचा था कि मैं कुछ कर दिखाऊँगा जब भी मैं किसी क्षेत्र में हाथ डालूँगा। इसी जज्बे को लेकर आप आगे भी बढ़ें, परन्तु करें क्या? आपकी अपनी भी कुछ सीमाएँ हैं, वस कमिंटेंट रह गया। ज़िन्दगी कब इतनी तेज़ी से आगे निकल गई आप सोच भी नहीं पाये। ज़िन्दगी से सम्पूर्ण रूप से रिटायर होने से पहले कुछ नहीं बहुत कुछ कर सकते हैं आप। आप अपनी पिछली बातों पर मरहम लगा सकते हैं। उसे फिर से एक नया मोड़ दे सकते हैं, उसे सजा सकते हैं, निखार सकते हैं। दुनियावी ज़िन्दगी की सेवा के अवकाश के बाद हमारा सम्पूर्ण आकाश सेवा के लिए हाज़िर है।)

सहमति ना दें तो उसे कैसा लगता है? वैसे ही इस शरीर रूपी दफ्तर का मेन

बाँस जिसे हम आत्मा या 'स्व' का नाम देते हैं वो जब भी निर्णय लेता उसके कर्मचारी उल्टा करते, कारण कि आज वो पूरी तरह से उन पर निर्भर है और उस निर्भरता का परिणाम ये है कि जो कुछ भी मन में विचार आते हैं वो हमारे इस खूबसूरत शरीर के ऊपर प्रकट हो जाते हैं क्योंकि जब बाँस ही बोर हो रहा हो तो उसके कर्मचारी क्यों नहीं बोर होंगे। इसीलिए आप जब ऑफिस आते तो लोगों का चेहरा अर्थात् बाहरी आवरण देखकर उनकी स्थिति का अंदाज़ा लगाते कि शायद इनकी तबियत ठीक नहीं है या घर की परिस्थिति कुछ ऐसी है। आज दिन तक भी आप इस बात को नहीं समझ पाए कि समस्या बाहर नहीं अंदर है। इस खूबसूरत शरीर की बनावट इतनी सुंदर है और इस कुदरत के करिश्मे को जो ऊर्जा संचालित करती उसे ही हम 'स्वयं' कहते या 'स्व' की संज्ञा देते हैं। इसी 'स्व' की ऊर्जा से शरीर का कारोबार आंतरिक रूप से चलता है।

इसके बिना बाह्य कारोबार ठप हो जायेगा। तो सबसे पहले तो आपको अब समय को देखते हुए अपने आप के साथ कुछ बातचीत करनी है। अब आप क्या करेंगे कि सबसे पहले अपने तीनों कर्मचारी मन, बुद्धि और संस्कार को एक श्रृंखला के साथ जोड़ेंगे तो आपका मन जो सोचेगा, बुद्धि उसी पर निर्णय लेगी तथा वैसा ही संस्कार बन जाएगा और आप एक अच्छे अपने स्वयं के बाँस बन जाएंगे। ऐसा करते ही आप अपने आप से जुड़ जाएंगे जो आपको हमेशा ऊर्जावान बनाए रखेगा, तो यह तो हो गई पहली बात।

सबसे अच्छा सम्बन्धी:- पहली बात जान लेने के बाद अब आप सबसे पहले सम्बन्धों को ठीक करने की तरफ कदम बढ़ाएँगे क्योंकि जब सम्बन्ध ठीक होते तो हमारे पास यदि कुछ ना भी हो तो भी हम खुश रह सकते हैं क्योंकि संबंधी खुश हैं। परन्तु प्रश्न ये उठता है कि सबसे अच्छा सम्बन्धी होगा कौन? मैंने आज तक - **श्रेष्ठ पेज 11 पर...**

खुशियाँ आपके साथ...

Peace of Mind
 the Entertainment of Channel
TATA SKY 192
VIDEOCON 497
airtel 686
RELISANCE 171

CABLE Network
 Frequency: 4054
 Symbol: 13230
 Polarization: Horizontal
 Satellite: INSAT-4A
 +91 9414151111
 +91 8104777111
 www.pmtv.in

7 कदम राजयोग की ओर...

राजयोग मेडिटेशन
 सच्चिदानंद

प्रश्न:- बाबा बार-बार कह रहे हैं कि निर्विघ्न जीवन बनाओ परंतु हमारे जीवन में तो कोई ना कोई विघ्न डालता ही रहता है। जितना हम निर्विघ्न बनना चाहते हैं, उतने ही विघ्न आ रहे हैं। हम जानना चाहते हैं कि निर्विघ्न स्थिति क्या है और इस स्थिति के लिए हम क्या-क्या बातें ध्यान में रखें?
उत्तर:- कलयुगी संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसे विघ्नों का सामना न करना पड़ता हो। विघ्न मनुष्य को कुछ सिखाने आते हैं, उसे कुछ देने आते हैं। किसी के लिए विघ्न वरदान बन जाते हैं और किसी के लिए अभिशाप। मुख्य बात है कि हम विघ्नों को विघ्न समझते हैं या नहीं! किसी-किसी का मन इतना निर्बल होता है कि उसे हर बात विघ्न लगती है। ऐसे नाजुक मन वाले लोग विघ्नों में अति परेशान हो जाते हैं।

अनेक विघ्नों का कारण मनुष्य के पूर्व जन्मों का खाता है। हमने कुछ ऐसे कार्य कर लिए हैं जिनका परिणाम जब सामने आता है तो मनुष्य उसको सह नहीं पाता। आप आने वाली हर बात को सहज स्वीकार करो तो मन हल्का रहेगा और जब मन हल्का रहता है तो विघ्न भी हल्के हो जाते हैं।
 निर्विघ्न स्थिति का अर्थ है हमारा मन प्रसन्न हो, संतुष्ट हो, किसी तरह का कोई डिस्टर्बेन्स मन को अशांत ना करे। हम अमृतवेला और मुरली का पूरा सुख लेते हों। हमारे पुरुषार्थ में कोई भी बात बाधक ना हो। ऐसी स्थिति बनाने के लिए हमें स्वमान का अच्छा अभ्यास करना चाहिए। प्रतिदिन सबेरे आँख खुलते ही 7 बार याद करना चाहिए कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और निर्विघ्न हूँ। साथ-साथ प्रतिदिन एक घण्टा विशेष योग दो स्वमान के साथ कर लेना चाहिए कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ। ऐसा करने से कई छोटे-मोटे विघ्न स्वतः नष्ट होते रहेंगे। जितना स्वयं को व्यर्थ से मुक्त रखेंगे, उतना ही जीवन विघ्न से मुक्त रहेगा।
प्रश्न:- बाबा कहते हैं कि तुम मेरे राईट हैण्ड बच्चे हो। राईट हैण्ड किसे कहा जाता है? हम बाबा के राईट हैण्ड हैं, ये हम कैसे समझें?
उत्तर:- भगवान युग परिवर्तन के लिए आए हैं।

उन्होंने महान अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। उनके इस महान कार्य में जो पूर्ण सहयोगी बनते हैं, जो अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं, वे ही भगवान के राईट हैण्ड हैं। जिस मनुष्य में जितनी शक्ति होती है, उतनी ही शक्ति उसके राईट हैण्ड में भी होती है। इसलिये बाबा हमें ये भी याद दिलाते हैं कि जितनी शक्ति मुझमें है, उतनी ही शक्ति तुममें भी है। तुम निर्बल नहीं हो इसलिये माया के आगे कभी झुक्ना नहीं।
 हम यदि निष्काम भाव से बाबा के कार्यों में मदद करते हैं, यदि हम बाबा के यज्ञ को वैसा ही समझते हैं जैसा हम अपने घर को समझते हैं, यदि हम बाबा के यज्ञ का वैसा ही ध्यान रखते हैं जैसा अपने घर का रखते हैं। यदि सोचा संघर्षों उस्तावों आशाओं

को हम सिरोधाय करके चलते हैं, आनाकानी नहीं करते अथवा यदि हम मन-मन-धन से सदा उसके कार्य में तत्पर रहते हैं तो हम उसके राईट हैण्ड हैं।
प्रश्न:- हम ज्ञान में पाँच साल से चल रहे हैं परंतु हमारे पापा पवित्रता व खानपान की धारणा के कारण माताजी के साथ झगड़ा और मारपीट करते हैं। हम तो कहते हैं कि बाबा हमारे साथ है फिर माया का वार क्यों हो रहा है?
उत्तर:- ये तो ठीक है कि बाबा आपके साथ है परंतु आपके पापा भी तो आपके साथ हैं! पापा की रुचि ईश्वरीय ज्ञान में नहीं है और आप सभी पूरी वफादारी से ज्ञान को फॉलो करना चाहते हैं तो थोड़ा बहुत तो संघर्ष होगा ही। इसे स्वीकार करके अपने चित्त को शांत करो। यदि आपको ये नशा है कि भगवान हमारे साथ है तो आपको इन सब बातों से पूरी तरह निर्भय हो जाना चाहिए। ये बातें तो परीक्षा के रूप में हरेक के सामने आती ही हैं परंतु याद रखना है कि इन परीक्षाओं में हमें अधिकतम अंक लेने हैं।
 आप घर में भोजन बनाते हुए भोजन को बहुत श्रेष्ठ वायब्रेशन्स दें। बार-बार यह अभ्यास करें

कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ और जब भोजन खिलायें तो यह संकल्प करें कि पवित्र भोजन को खाने से इस आत्मा का चित्त शांत हो जाए।
 सात ही आपको अपने घर में 3 बार 15-15 मिनट बैठकर योग के वायब्रेशन्स फैलाने हैं। पहली बार घर में शांति की, दूसरी बार पवित्रता की और तीसरी बार शक्तियों की किरणें फैलानी हैं। इस अलौकिक माहौल में उनका चित्त शांत हो जाएगा।
प्रश्न:- मैं आठवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मेरा ध्यान छोटी-छोटी वस्तुओं को ओर बहुत जाता है और मैं कभी वस्तुओं से संतुष्ट भी नहीं हो पाती हूँ। इसके कारण पढ़ाई में भी एकाग्रता नहीं होती। मैं क्या करूँ?
उत्तर:- तुम बहुत समझदार हो जिसे ये पता है कि उसका आकर्षण वस्तुओं को ओर जा रहा है। संसार में ऐसे लोग भी हैं जो वस्तुओं के गुलाम हैं लेकिन इसका उन्हें एहसास नहीं है। तुम छोटी होते हुए भी बड़ी हो जो गहराई से इन बातों को समझ सकी हो।
 जिस मनुष्य का ध्यान व्यक्तियों या वस्तुओं में बहुत रहता है, वह पढ़ाई में कभी एकाग्र नहीं रह सकता। वस्तुओं में भागता मन एकाग्रता से दूर चला जाता है। तुम्हें ये जानना चाहिए कि ये सांसारिक पदार्थ मनुष्य को कभी भी तृप्त नहीं होने देते। एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा प्रबल हो जाती है। इसलिये समझदार मनुष्य को चाहिए कि वह सुंदर वस्तुओं का गुलाम ना बने। ये वस्तुएँ विनाशी हैं और आत्मा अविनाशी है। विनाशी वस्तुएँ अविनाशी आत्मा को तृप्त नहीं कर सकती। इसलिये जो कुछ तुम्हारे पास रहता है, उसमें ही संतुष्ट रहा करो और सबकुछ बाबा पर छोड़ दो। वो तुम्हें अच्छी से अच्छी चीज स्वतः ही दिया करेंगे।
 पढ़ाई में एकाग्रता सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। वस्तुएँ तो फिर भी मिल जाती हैं लेकिन पढ़ाई में यदि असफल हुए तो वो समय लौट कर नहीं आता। इसलिये अपनी इच्छाएँ कम कर दो तो पढ़ाई में तुम्हारी एकाग्रता बहुत बढ़ जाएगी। अब अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दो।



हम अकेले पैदा होते हैं, अकेले जीते हैं और अकेले मरते हैं, केवल हमारे अस्थायी संबंधों के माध्यम से हम कुछ क्षणों के लिए यह भ्रम पैदा कर सकते हैं, कि हम अकेले नहीं हैं।.....-ज्योर्ज ओर्सन वेल्स।

यह संसार एक बहुत बड़ा मायाजाल है, जहाँ हम सभी अवास्तविक और अव्यावहारिक लोगों से घिरे हुए रहते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हममें से कोई भी आज ऐसा नहीं है जो अपना जीवन यथार्थवादी ढंग से जी रहा हो। इसका मूल कारण है हम सभी के भीतर छुपी अतिशयोक्ति करने की बुरी आदत या यूँ कहें कि हर छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करने का हमारा गलत आचरण। अपने आप से पूछें कि हम दिन भर में किसी भी बात को बिना मिर्च मसाला डाले कितना प्रस्तुत कर पाते हैं? चाहे किसी

अतिरंजना करना ठीक नहीं

नए सिनेमा की कहानी को सुनाते वक्त या अपनी उपलब्धियों के बारे में किसी को बताते हुए या फिर किसी के व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों को साझा करते समय, इन सभी स्थितियों में हम कितना ना मसाला भर-भरके सामने वाले को रोचक कथा सुनाते हैं, है ना? अवश्य!! क्योंकि तथ्यों को गुणा करके उनको और बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करना यह तो बड़ा आसान काम है जिसमें अधिकांश स्वाभाविक रूप से हमारी आदत अनुसार हमसे होता रहता है। पर एक प्रश्न यहाँ अवश्य मन में उत्पन्न होता है कि तथ्यों को खींच-खींचकर लम्बा करना इतना भी क्या प्रलोभक है? क्या वास्तविकता इतनी दिलचस्प नहीं है जो हम इतनी लम्बी खिंचाई में अपना और दूसरों का समय बर्बाद करते हैं? या फिर अपनी बात बहुतों तक पहुँचाने का यह कोई सरल तरीका है? कारण जो भी हो, परन्तु हकीकत तो यही है कि जब हम बातों को बेवजह बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करते हैं तब वह हमारे एवं अन्यो के मन में बड़ी उलझन पैदा कर देती हैं। परिणामस्वरूप फिर हमारे रिश्ते तनावपूर्ण हो जाते हैं। अतः हमें इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि जब-जब हम किसी बात में

अतिशयोक्ति करते हैं, तब हम वास्तविकता को विकृत कर देते हैं और हमारे इस कर्म को धोके के रूप में देखा जाता है, जिस वजह से हमारे जीवन में अविश्वास पैदा होता है और अंततः हम दूसरों की घृणा का पात्र बन जाते हैं। तभी ही कहा गया है कि एक झूठ छुपाने के लिए और 100 झूठ का सहारा लेना पड़ता है। अब इस आदत को जिसे कई लोग एक हानिरहित आदत समझते हैं, इसका इलाज करने का सहज उपाय क्या है? क्या इतने वर्षों से पड़ा हुआ अतिरंजना का संस्कार इतनी सरलता से निकल सकता है? अनुभव कहता है कि कभी-कभी या प्रासंगिक ढंग से लोगों को हंसाने के लिए या तंग वातावरण को हल्का करने के लिए अतिरंजना करना ठीक है, परन्तु हद से ज्यादा इस चीज को करना वह फिर हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

इसलिए एक बात सदैव याद रखें कि हमें अपनी करने के लिए उसे बढ़ा-चढ़ाकर बोलने की आवश्यकता नहीं है, इसके बजाय हमें यथार्थवादी होने का अभ्यास करना चाहिए। तो! आज से ईमानदार और विश्वसनीय बनने पर जोर दें, जिससे फिर आप सभी के सम्मान का पात्र बन जायेंगे।

आने वाले सुबह की तैयारी...

जीवन में जिसको भी देखा सभी में कुछ न कुछ स्वार्थ था। सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में आप अपने जीवन में उस सम्बन्ध को तलाशते रहे जो कभी भी आपसे कुछ ऐसी मांग ना करे और संतुष्ट रहे। लेकिन कोई मिला शायद नहीं! कारण क्या? कि सभी की सोच एक दायरे वाली थी। सभी जैसे से लेकर शादी तक ही सोचते, उसे जीवन का कर्म मानते थे, जीवन की विद्या मानते रहे। परन्तु यह अधूरापन था। तभी तो आप सबकुछ करने के बाद भी खालीपन के साथ रहे। इस खालीपन में सबसे पहले तो मुझे अपने आपको अपना सबसे अच्छा सम्बन्धी बनाना पड़ेगा और उस सम्बन्ध को जो कि 'खुद' स्वयं ही है को भरने वाला और कोई नहीं, एक ऐसी शक्ति हो सकती है जो स्वयं की तरह ही हो और स्वयं का रूप जैसे बिन्दु स्वरूप है, निराकार है, जैसे हमारे इस बिन्दु स्वरूप को, जो हम सबका विश्वपिता है वो भी निराकार है के द्वारा मिल सकता है। जिसे हम सभी विस्तार की सीमा से भी परे, असीमित कहते हैं, वो सम्बन्धी ही हमें सन्तुष्टता प्रदान कर सकता है, हमारे अंदर के घावों पर मरहम लगा सकता है।

संतुष्टता का एहसास:-

आप जैसे ही अपने आप से, खुद से जुड़ते हैं, मिलते हैं, वार्तालाप करते हैं, आपका वह खालीपन जाता जायेगा। आप अपने आप से संतुष्ट महसूस करेंगे। आपको जो भी विशेषतायें हैं, वो आपको मदद करेंगी उन लोगों को समझने में जो आपको नज़रअंदाज़ करते थे। अब आपकी विशेषतायें (स्व की, जिसमें ज्ञान व अनुभव तथा आनंद व शान्ति) ये सब आपको नई पीढ़ी से जोड़ेंगी और सब हम उम्र जैसे ही आपसे जुड़े रहेंगे। यह संतुष्टता गुणों के चिंतन से आती जाती है।

आने वाली सुबह की मांग:-

सभी घर के सदस्यों ने आपसे हमेशा अपनी-अपनी शर्तें रखीं कि मुझे ये चीजें चाहिए तो आपने उन्हें उन चीजों को उपलब्ध कराया। वैसे ही आने वाली सुबह जिसे स्वर्णिम सुअवसर कह सकते हैं, जहाँ सभी सुखी होंगे और आपको किसी की कोई चिंता नहीं होगी, वह भी आपसे कुछ मांग रही है। जैसे रिटायर होने के बाद आपके पास आगे के जीवन यापन के लिए पेंशन मिलती है और आपको कोई चिंता नहीं होती, वैसे ही यदि आप चाहते हैं कि आपको एक जीवन तो क्या आने वाले अनेकों जीवन को चलाने के लिए परमात्मिक

पेंशन मिले, इसके लिए आपको क्या करना होगा कि जैसे आपने अपने परिवार के लिए सबकुछ न्योछावर कर दिया, अपनी ज़िन्दगी के 50-55 साल दे दिए वैसे ही इस परमात्मिक कार्य में, स्वर्णिम सवेरा लाने के कार्य में आपको बचे हुए कुछ साल देने हैं। करना कुछ नहीं है बस अपनी स्व-स्थिति को शक्तिशाली बनाना है। किसी के बारे में कुछ भी भविष्य के लिए नहीं सोचना है कि मेरे बच्चे का क्या होगा? अर्थात् जो जैसा कर्म करेगा, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी, बस ऐसा ही चिंतन करना है तो चिंता वैसे ही समाप्त होती जाएगी। तो मैं क्यों व्यर्थ चिंतन करूँ? व्यर्थ अर्थात् भूत और भविष्य से मुक्त होकर आप अपने वर्तमान को श्रेष्ठ बनाइए। आप सभी को वही संदेश देने भी लगेंगे।

चूँकि साठ साल तक तो कभी ध्यान नहीं दिया, परन्तु अब ऐसे कार्य करेंगे तो कभी मन उदास भी होगा, लेकिन आप अपने उस काम को जारी रखेंगे। सुबह उठेंगे, विश्वपिता से अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे, जो हमारा पहला सम्बन्धी है, तो सर्व सम्बन्धों से हमें वैसे ही निजात मिल जायेगी। वो सारे सुख हमें एक से ही मिल जायेंगे। फिर आपको किसी की तलाश नहीं रहेगी और आपका सवेरा बहुत सुंदर होगा..... -ब्र.कु. अनुज,दिल्ली



वर्धा-सिंदी रेलवे। नवनिर्वाचित विधायक समीर कुणावार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।



रतलाम-शास्त्री नगर। नवनिर्वाचित महापौर डॉ. सुनीता थार्द को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. संगीता तथा अन्य।



श्रीरामपुर-महा। स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए पूर्व मंत्री अप्पा साहेब मस्के, नराध्यक्ष ससाजे ताई, माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. गंगाधर व ब्र.कु. बालू, ब्र.कु. मंदा तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



परभणी-महा। 7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' के अंतर्गत डॉक्टर्स तथा मेडिकल वालों के लिए 'मेडिटेशन तथा मेडिसीन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्ष विशाल कदम, वकील संघ अध्यक्ष माधवराव भोसले, गुरुबुद्धि संस्थान अध्यक्ष डॉ.एस. वाघमारे, डॉ. मल्हार देशपांडे, ब्र.कु. प्रणिता, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य।



नवी मुम्बई। बौद्ध भिक्षुओं को ईश्वरीय संदेश देने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. बहनें।



नेवासा-महा। ज्ञान-विज्ञान प्रदर्शनी के कार्यक्रम में व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद समूह चित्र में शिक्षण अधिकारी सामलेटी बहन, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. वंदना, कुरे जी तथा अन्य।

गीता के सच्चे अर्थ से जीवन में परिवर्तन होगा- अण्णा हज़ारे



अहमदनगर(जाँगींग पार्क)। जस्टिस इश्वरैया पूर्व उच्चतम न्यायालय आंध्र प्रदेश, ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि परमात्मा एक है। वे विश्व के नियता हैं। वे सृष्टि के कालचक्र के पुनरावृत्ति में हमें मानव से देव बनाने इस धरा पर अवतरित होते हैं। गीता में भी लिखा है कि यदा यदा धर्मं ग्लानिर्भवति भारतः...., अतः अब हमें उन्हें पहचान कर भारत को देवस्थान बनाना है।

सबसे की अपील, कि सभी लें राजयोग की शिक्षा आज मनुष्य सुख की तलाश में भाग रहा है, लेकिन सच्चे सुख से वो बहुत दूर जा रहा है। हम सालों से गीता पढ़ते आये, लेकिन गीता के श्लोकों का असली अर्थ केवल ब्रह्माकुमारी द्वारा दिये गये ज्ञान से ही विश्व को मिल सकता है। उक्त उद्गार अण्णा हज़ारे जी ने ब्रह्माकुमारी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम में व्यक्त किए। इस ज्ञान से केवल गीता रहस्य को जान ही नहीं सकते लेकिन ब्रह्माकुमारी द्वारा दिए गए राजयोग से गीता ज्ञान को अपने जीवन में धारण कर सकते हैं। ब्रह्माकुमारी द्वारा बताये जाने वाले ज्ञान तथा राजयोग से ही मनुष्य का स्व-परिवर्तन तथा समाज परिवर्तन संभव है। अतः सबसे मेरी अपील है कि ब्रह्माकुमारी द्वारा बताये जाने वाले ज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा अवश्य प्राप्त करें। ये शिक्षा ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सारे विश्व में निःशुल्क दी जाती है। मैंने स्वयं ब्रह्माकुमारी के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आवू में 3 बार कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर ब्रह्माकुमारी के कार्यों को नज़दीक से देखा है। “गीता रहस्य प्रवचनमाला” प्रवचन में ब्र. कु. उपा. ने बताया कि गीता

ज्ञान केवल अर्जुन को नहीं दिया गया, बल्कि विश्व की सब आत्माओं के लिए दिया गया है। विश्व की महान आत्माओं ने अपने जीवन में गीता ज्ञान को अपनाया, तभी वो महान बने। गीता ज्ञान को अपने जीवन में अपनाने से सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकता है। हमें अपने जीवन को कैसे जीना है इसका मार्गदर्शन गीता ज्ञान से मिलता है। गीता ज्ञान में सारे वेदों का सार समाया हुआ है। उन्होंने कहा कि नगर के लिए यह बहुत ही सुअवसर है गीता के रहस्य को जानने का। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों ने अपने जीवन में गीता ज्ञान को अपनाया तभी वे महान बने। इस कार्यक्रम का उद्घाटन अण्णा हज़ारे जी के हाथों से हुआ। उनके साथ मेयर संगम जगताप, ब्र. कु. गंगाधर, ब्र. कु. राजेंद्र, ब्र. कु. राजकुमार, ब्र. कु. दीपक हरके, ब्र. कु. सुनंदा, ब्र. कु. उपा., ब्र. कु. राजेश्वरी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर अहमदनगर के स्कूल के बच्चों ने दिव्य गीतों पर नृत्य प्रस्तुति देकर सबको मोहित किया। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य हज़ारों लोगों ने लाभ लिया।



अहमदनगर। दीप प्रज्वलन करते हुए अण्णा हज़ारे के साथ मेयर संगम जगताप, ब्र. कु. गंगाधर, ब्र. कु. डॉ. राजेंद्र, ब्र. कु. राजकुमार, ब्र. कु. दीपक हरके, ब्र. कु. सुनंदा, ब्र. कु. उपा., ब्र. कु. राजेश्वरी, डॉ. कान्हेलकर तथा अन्य।



अहमदनगर। अण्णा हज़ारे गुब्बारे छोड़ते हुए। साथ हैं ब्र. कु. सुनंदा, ब्र. कु. उपा., ब्र. कु. राजेश्वरी, ब्र. कु. दीपक, ब्र. कु. प्रो. राजकुमार, ब्र. कु. गंगाधर, ब्र. कु. राजेंद्र।

कौमी एकता की मिसाल बनी शिव संदेश यात्रा



फर्रुखाबाद-उ.प्र.। पिछड़ा वर्ग आयोग के चेयरपर्सन इश्वरैया, ब्र. कु. मंजु तथा विभिन्न धर्म के प्रतिनिधिगण समूह चित्र में।

फर्रुखाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी के बीबीगंज सेवाकेन्द्र की ओर से निकाली गई शोभायात्रा में गंगा जमुना तहजीव की खुशबू बिखरी। इस शिव संदेश यात्रा में सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शोभायात्रा में ब्र. कु. बहनों व भाइयों के अलावा पयन मियां, ज्ञानी गुरुवचन सिंह, अरुण प्रकाश तिवारी ददुआ, पादरी किशन मसीह, मौलाना सदाकत हुसैन के साथ तमाम लोग शामिल हुए। इस यात्रा के द्वारा समाज के लोगों को व्यसनमुक्त, निर्विकारी और भाइचारे का संदेश दिया गया। शोभायात्रा का जगह-जगह स्वागत किया गया। मनीष मिश्रा ने शोभायात्रा में आए धर्म प्रमुखों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। यात्रा के दौरान लोगों को परमात्मा द्वारा दिए गए वचन का स्मरण कराया गया।

हुआ आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन:

यात्रा के मेला श्रीरामनगरिया में पहुंचने पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन पिछड़ा वर्ग आयोग के चेयरपर्सन व पूर्व न्यायाधीश जी. इश्वरैया ने किया और निर्विकारी, चरित्रवान बनाने वाली प्रदर्शनी की भी स्तुति की। दिल्ली से आए मीडिया विंग के कोऑर्डिनेटर ब्र. कु. सुरांत ने संस्था का परिचय देते हुए कहा कि यह संस्था औपचारिक ज्ञान प्रदान करती है जिसकी समाज में बेहद ज़रूरत है। हमारी युवा जेनरेशन को इस आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता है। कासगंज से आई ब्र. कु. सरोज ने कहा कि यह युग कल-पुर्जो व कलह क्लेश का युग है। हर चीज की अति हो रही है। ऐसे समय में उस परमशक्ति परमात्मा की आवश्यकता है जो इस धरा पर

अवतरित होकर इस सृष्टि का परिवर्तन करे। डी.एम. एन.के.एस. चौहान ने कहा कि हमें अपने कर्म पर विश्वास रखना चाहिए। इस परिवर्तन की बेला में सभी को सहयोगी बनना है। दशनाम जूना अखाड़ा के सचिव इश्वरानंद और सुरेंद्र सिंह सोमवंशी ने कहा कि यदि हम पारस्परिक सहयोग करें तो सारा संसार एक परिवार, एक कुटुंब बन सकता है। इश्वरैया ने कहा

कि परमात्मा का नशा सबसे बड़ा नशा है। उससे बड़ा कोई नशा नहीं है। आत्मा केवल ज्ञान गंगा के जल से ही पवित्र बन सकती है। ज्ञानी गुरुवचन सिंह, अरुण प्रकाश तिवारी ददुआ, पादरी किशन मसीह, मौलाना सदाकत हुसैन तथा ब्र. कु. मंजु ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस मौके पर पूर्व विधायक महरम सिंह, पूर्व हेल्थ डायरेक्टर रामबाबू, सुरेश चन्द्र गोयल आदि मौजूद रहे।



हरिद्वार। 18 जनवरी समृति दिवस पर मंसा देवी मंदिर के अध्यक्ष महंत रामानंदपुरी महाराज अपना विचार व्यक्त करते हुए। साथ हैं ब्र. कु. मीना।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र. कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारी, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आवू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkiv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आवू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 4th feb-2015
संपादक: ब्र. कु. गंगाधर, प्रकाशक: ब्र. कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारी मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशंस जयपुर से मुद्रित।